CIN-No-UT4999RJ2020PTC0679
UN NO-200022186
राजस्थान,दिल्ली,छत्तीसगढ़ से एकसाथ प्रकाशित
Tital Code:RAJHIN27921

दैनिक
मरुधर विशेष

Marudharvishesh@gmail.com मो.7014373732

वर्षः 01 | अंकः 228 | जयपुर | 3 अप्रैल 2023 | सोमवार | मूल्यः रु. 5 | पृष्ठः 04

शिव चरण भंडाना की पुस्तक ये नन्हे देशभक्त का विमोचन आज

जिले के साहित्यकारों एवं कवियों को दिया जाएगा श्री कन्हैयालाल स्मृति साहित्य सम्मान - 2023

दौसा / राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित शिवचरण भंडाना की पुस्तक ?ये नन्हे देशभक्त? का विमोचन आज दोपहर 2:00 बजे रावत पैलेस, दौसा में साहित्यकार एवं कवि संगम समारोह में किया जाएगा । कार्यक्रम संयोजक ओमप्रकाश शर्मा ने बताया कि समारोह में आकाशवाणी एवं साहित्य अकादमी से भी अधिकारी शिरकत करेंगे ।उन्होंने बताया कि इस अवसर पर लेखक शिवचरण भंडाना के पिता के नाम पर कवियों एवं साहित्यकारों को श्री कन्हैयालाल स्मृति साहित्य सम्मान - 2023 भी प्रदान किया जाएगा ।

सजा के खिलाफ राहुल गांधी सूरत कोर्ट जाएंगे

सूरत. 'सभी चोरों का सरनेम मोदी क्यों होता है...' इस बयान से जुड़े मानहानि केस में सूरत कोर्ट ने 23 मार्च को राहुल गांधी को दोषी करार दिया था। ठीक दूसरे दिन यानी 24 मार्च को राहुल की लोकसभा सदस्यता भी रद्द कर दी गई थी। अब 11 दिन बाद राहुल इस फैसले के खिलाफ सूरत की सेशन कोर्ट में याचिका लगाने वाले हैं। न्यूज एजेंसी एएनआई ने कांग्रेस सूत्रों के हवाले से कहा कि राहुल की लीगल टीम 3 अप्रैल को कोर्ट जाएगी। 23 मार्च को कोर्ट ने राहुल की मौजूदगी में उन्हें 2 साल जेल की सजा और 15 हजार जुमार्ना लगाया था। कुछ देर बाद कोर्ट ने उन्हें जमानत भी दे दी थी। साथ ही सजा को 30 दिन के लिए स्थगित कर दिया था। यानी इस दौरान राहुल की गिरफ्तारी नहीं होगी और वे हाईकोर्ट या सुप्रीम कोर्ट में फैसले के खिलाफ याचिका लगा सकते हैं।

कैश कलेक्शन कर लौट रहे 2 व्यापारियों से लूट:पहले धक्का मारकर गाड़ी से गिराया, विरोध किया तो मारी गोली

भरतपुरबदमाशों ने विरोध करने पर एक व्यापारी विनोद के गोली मार दी।भरतपुर में बाजार से कैश कलेक्शन कर लौट रहे दो व्यापारियों से बाइक सवार बदमाशों ने 2.25 लाख रुपए लूट लिए। व्यापारियों ने विरोध किया तो एक के गोली मार दी। भागते समय बदमाश स्कूटी भी ले गए। घटना वैर थाना इलाके में रविवार शाम 4.30 बजे हुई।जानकारी के मुताबिक बयाना निवासी विनोद (45) साबुन और हरिओम (50) घी के व्यापारी है। दोनों एक ही स्कूटी से बाजार में कैश कलेक्शन करने निकले थे। दोनों कैश कलेक्शन कर लौट रहे थे तो दो बाइक पर सवार युवक उनका पीछा कर रहे हैं।घायल व्यापारी ओमप्रकाश ने बताया कि बदमाश भुसावर से ही उनका पीछा कर रहे थे। जगजीवनपुर गांव के पास बदमाशों ने चलती स्कूटी को लात मारी। इससे बेकाबू होकर सड़क पर गिर पड़े।नीचे गिरते ही बदमाश बैग छीनने लगे। विरोध करने पर बदमाशों ने विनोद की जांघ पर गोली मार दी और बैग छीनकर ले गए। ओमप्रकाश ने बताया कि उसके बैग में 1.25 लाख रुपए और विनोद के बैग में 1 लाख रुपए थे। जाते वक्त एक बदमाश स्कूटी भी ले गया।वैर थाना इंचार्ज प्रेम भास्कर ने बताया कि वारदात भुसावर और वैर के बीच में हुई है। तीनों आरोपियों ने चेहरा ढंक रखा था। उन्होंने व्यापारियों से मारपीट और फायरिंग कर लूटी की वारदात को अंजाम दिया है। एक व्यापारी विनोद को भरतपुर रेफर किया गया है, दूसरे का इलाज कर छुट्?टी दे दी गई है। मामला दर्ज कर लिया गया है। नाकाबंदी जारी है।

केसरिया महापंचायत में उठी ईडब्ल्यूएस में 14 फीसदी आरक्षण की मांग

केसरिया महापंचायत में प्रदेशभर से हजारों की तादाद में राजपूत समाज और स्वर्ण समाज के लोग एकत्रित हुए

जयपुर। श्री राजपूत करणी सेना की ओर से आज विद्याधर नगर स्टेडियम में आयोजित केसरिया महापंचायत में प्रदेशभर से हजारों की तादाद में राजपूत समाज और स्वर्ण समाज के लोग एकत्रित हुए। केसरिया पंचायत में शामिल हुए लोगों ने केसरिया पगड़ी पहनी हुई थी। श्री राजपूत करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुखदेव सिंह गोगामेडी के नेतृत्व में हुए केसरिया पंचायत में उत्तर प्रदेश सरकार में राज्य मंत्री रघुराज सिंह और यूपी से भाजपा सांसद बृजभूषण सिंह भी शामिल हुए तो वही राजस्थान से भाजपा विधायक नरपत सिंह राजवी, गहलोत सरकार में राज्य मंत्री राजेंद्र सिंह, पूर्व विधायक रणवीर सिंह भी केसरिया महापंचायत में शामिल हुए। वहीं प्रदेश में भाजपा-कांग्रेस से जुड़े प्रमुख जनप्रतिनिधियों नेताओं ने केसरिया पंचायत से दूरी बनाए रखी। कैबिनेट मंत्री प्रतापसिंह खाचरियावास, राज्य मंत्री भंवर सिंह भाटी, जयपुर ग्रामीण से भाजपा सांसद राज्यवर्धन सिंह राठौड़, उप नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ सहित कई प्रमुख राजपूत नेता भी इस कार्यक्रम में नहीं आए, जो कि चर्चा का विषय बना रहा। हालांकि सुखदेव सिंह गोगामेडी का कहना है कि यह कोई राजनीतिक कार्यक्रम नहीं था हमने सब को निमंत्रण दिया था यह सब समाज का कार्यक्रम है और सर्व समाज के लोग हजारों की तादाद में इसमें शामिल हुए हैं।

यूपी से भाजपा सांसद दुष्यंत सिंह ने केसरिया महापंचायत को संबोधित करते हुए कहा कि राजपूत समाज का इतिहास सतयुग से शुरू होता है, हमारा इतिहास त्रेता, द्वापर और कलयुग में भी मिलता है अब हमें समय के साथ अपने आप को बदलना पड़ेगा। हमारा क्या योगदान हो सकता है हमारी आवश्यकता है कहां है, उस आवश्यकता में हम कहां फिट बैठते हैं इस पर हमें चिंतन मंथन करना होगा। वक्ताओं ने कहा कि राजपूत समाज सभी वर्गों को साथ लेकर चलते हैं, इस तरह के आयोजनों से समाज मजबूत होता है। देश को इसकी खोई हुई भी प्रतिष्ठा कोई दिला सकता है तो वह राजपूत समाज ही है। वही उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री रघुराज सिंह ने संबोधित करते हुए कहा कि सभी को एकजुट होना होगा। हमारी पूर्व की गलतियों की वजह से हम 1000 साल तक गुलाम रहे लेकिन ऐसी गलती अब नहीं करनी है, बाकी पूरे देश में रामराज्य स्थापित होगा और इसकी शुरूआत हो चुकी है। उन्होंने कहा कि हिंदुत्व की मजबूती के लिए 2 की बजाय चार बच्चे पैदा करने चाहिए। श्री राजपूत करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुखदेव सिंह गोगामेडी ने कहा कि ईडब्ल्यूएस में शामिल जातियां अपना अधिकार मांग रही है। सुखदेव सिंह गोगामेडी ने कहा कि राजपूत समाज ने समय-समय पर देश और प्रदेश के लिए अपनी कुबार्नी दी है जब भी ऐसा समय आया तब हम हमेशा आगे खड़े रहे। अब सरकारों को हमारी मांगे सुननी चाहिए। सुखदेव सिंह गोगामेडी ने कहां की वकीलों की तर्ज पर साधु-संतों की सुरक्षा के लिए भी कानून बनना चाहिए पूर्व में कई साधु संतों की हत्या हो चुकी है इस पर सरकार को ध्यान देना चाहिए।

राजेंद्र राठौड़ नेता प्रतिपक्ष, सतीश पूनिया उपनेता प्रतिपक्ष

जयपुर. भाजपा ने राजेंद्र राठौड़ को नेता प्रतिपक्ष और सतीश पूनिया को उपनेता प्रतिपक्ष बना दिया है। इसको लेकर रविवार दोपहर 3 बजे से भजपा मुख्यालय में बीजेपी विधायक दल की बैठक चल रही थी। गौरतलब है कि पूर्व नेता प्रतिपक्ष रहे गुलाबचंद कटारिया के असम का राज्पाल नियुक्त होने के बाद से खाली चल रहा था। आखिरकार बीजेपी रविवार को राजस्थान विधानसभा का नेता प्रतिपक्ष के पद मौजूदा उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ को बना दिया है। दोपहर 3 बजे बाद उनके नाम को लेकर विधायक दल की बैठक में चर्चा हुई। करीब 68 साल के राठौड़ का जन्म 24 अप्रैल 1955 का है। राठौड़ 7 बार के विधायक हैं। अबकी बार चूरू विधानसभा सीट से विधायक चुनकर आए हैं। कांग्रेस विधायकों के इस्तीफा प्रकरण में राठौड़ ने राजस्थान हाईकोर्ट में जनहित याचिका लगाकर खुद ही वकील के तौर पर पैरवी भी की और गहलोत सरकार को चिंता में डाल दिया था। राठौड़ को नेता प्रतिपक्ष बनाए जाने पर उपनेता प्रतिपक्ष का पद खाली हो गया था। यही वजह रही कि बीजेपी के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया को उपनेता प्रतिपक्ष बनाया गया है। सूत्र बताते हैं कि पार्टी हाईकमान पूनियां को विधानसभा चुनाव से पहले कुछ अहम जिम्मेदारियां सौंपना चाहता है, ताकि पब्लिक में सही मैसेज दिया जा सके। आगामी दिनों में इलेक्शन कमेटी में भी उन्हें अहम दायित्व सौंपा जा सकता है।

निलंबित एएसपी दिव्या तीन दिन की रिमांड पर

अजमेर. 2 करोड़ रुपए की घूस मांगने के मामले में आरोपी निलंबित एएसपी दिव्या मित्तल को रविवार दिन में करीब 4 बजे एसओजी की टीम कोर्ट में लेकर पहुंचे। इसके बाद जज के घर ले जाया गया। एसओजी ने पांच दिन का रिमांड मांगा था। तीन दिन की रिमांड दी गई है। एडिश्नल एसपी एसओजी जोधपुर के कमल तंवर जज के घर लेकर पहुंचे हैं। दिव्या को लोहाखान सिविल लाइंस स्थित जज गौरव गर्वा के निवास पर पेशी के लिए लाया गया था। एडिशनल एसपी कमल सिंह तंवर ने बताया- मामले में दिव्या मित्तल को जयपुर ले जाकर पूछताछ की जाएगी। सूत्रों की माने तो दिव्या की रिमांड के दौरान जयपुर मुख्यालय में दिव्या से मुकदमों से संबंधित कई पूछताछ होगी। माना जा रहा है कि साथ ही मुकदमे में पूर्व में जांच अधिकारी रहे तत्कालीन क्लॉक टावर थाना प्रभारी दिनेश कुमावत, एसओजी के सीआई भूराराम खिलेरी से भी पूछताछ की जा सकती है। पूछताछ के बाद मामले में कई खुलासे होंगे जिससे कई अधिकारियों पर गाज गिर सकती है।

एडिशनल एसपी कमल तंवर ने बताया, पुलिस अधिकारी को निर्धारित कर्तव्यों का पालन करना होता है, लेकिन दिव्या ने कर्तव्य पालन में त्रुटि की। इसका फायदा आरोपी को मिला। यह लापरवाही अपराध है। दिव्या को एनडीपीएस के मामले में गिरफ्तार कर लिया है। उन्होंने बताया कि रामगंज थाने में दर्ज मामले में आरोपी सुनील नंदवानी को गिरफ्तारी की अनुमति मिलने के बावजूद उसे गिरफ्तार नहीं किया गया। जबकि वह पूछताछ के दौरान कस्टडी में था। प्रकरण सामने आने के बाद उसे गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। जहां से उसे जमानत मिली। इसी तरह प्रकरण संख्या 183 में भी आरोपी को गिरफ्तार नहीं किया गया। एडिशनल एसपी कमल सिंह तंवर के अनुसार आरोपी दिव्या के खिलाफ अजमेर के रामगंज थाने में 24 मई 2021 को एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/22 व 8/29 के तहत दर्ज मामले की जांच में लापरवाही के आरोप में जांच एजेंसियां पूछताछ कर रही है। इसी क्रम में 3 मामलों में 2 प्रकरण (संख्या 183,195) रामगंज व एक (संख्या 139) अलवर गेट थाने में दर्ज थे। इनकी जांच 27 फरवरी 2030 को एसओजी को दी गई थी। एसओजी को इन मामलों की जांच में लापरवाही मिली। दिव्या मित्तल को जमानत के एक दिन बाद ही शनिवार को अजमेर जेल के बाहर से एसओजी ने फिर गिरफ्तार कर लिया था। एसओजी के पास दर्ज एनडीपीएस के तीन केसों में दिव्या ने जांच सही तरीके से नहीं की थी। एडीजी एसओजी अशोक राठौड़ ने बताया था कि दिव्या मित्तल के खिलाफ अभी तक एसओजी में कोई शिकायत दर्ज नहीं है। दिव्या के पास एनडीपीएस की 3 फाइलें थीं। इसकी जांच वह काफी समय से कर रही थी। इन फाइलों में मित्तल की ओर से जांच में गड़बड़ी करना सामने आया है। इसलिए एनडीपीएस एक्ट के तहत जांच अधिकारी दोषी होता है। उन्होंने बताया कि दिव्या मित्तल को आज अजमेर जेल के बाहर से गिरफ्तार किया गया। दिव्या एसीबी की गिरफ्त में आने के 100 दिन बाद अजमेर जेल से बाहर आई थी।

4 दिन से लापता 8 साल की बच्ची के 10 टुकड़े किए

उदयपुर. 8 साल की बच्ची के 10 टुकड़े कर बेरहमी से मर्डर करने का मामला सामने आया है। मासूम 4 दिन से लापता था। घर से 200 मीटर दूर खंडहर में उसके शव के टुकड़े पड़े मिले। घटना उदयपुर के मावली इलाके की शनिवार शाम की है। पुलिस बच्ची की मौत के पीछे किसी तांत्रिक क्रिया किए जाने सहित अन्य एंगल से भी जांच कर रही है। पुलिस ने बताया कि पूजा लोपड़ा के सरकारी स्कूल की कक्षा 4 में पढ़ती थी। 4 दिन पहले स्कूल से आकर खेत पर जाने के लिए निकली थी। जब वह खेत पर नहीं पहुंची तो घरवालों ने उसकी तलाश की। बच्ची के नहीं मिलने पर पिता सन्नू भील ने 28 मार्च को पुलिस को मामले की जानकारी दी। पुलिस चार दिन से बच्ची की तलाश कर रही थी। शनिवार देर शाम घर के आस-पास तलाश की तो 200 मीटर दूर खंडहर में उसका शव मिला। हत्या के विरोध में रविवार को लोगों ने धरना दिया। उन्होंने हत्यारों को जल्द से जल्द पकड़कर सजा देने की मांग की है। बच्ची के शव के टुकड़े-टुकड़े पड़े थे। पुलिस ने उन्हें इकट्?ठा किए और पोस्टमॉर्टम के लिए उदयपुर के एमबी हॉस्पिटल ले गई। रविवार सुबह पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। मृतक बच्ची के चाचा मांगीलाल का कहना है कि हत्यारों को ऐसी सजा मिलनी चाहिए कि आगे ऐसी घटना नहीं हो। मांगीलाल ने मामला फास्ट ट्रेक कोर्ट में चलाने और सरकार से मुआवजे की भी मांग रखी। मावली डिप्टी कैलाश कुवर ने बताया कि अपहरण को लेकर 28 मार्च को लड़की के पिता ने मुकदमा दर्ज कराया था। बच्ची का शव टुकड़ों में मिला। पोस्टमॉर्टम के बाद आगे की चीजें क्लीयर हो पाएगी। फिलहाल डिटेल किए गए 4 युवकों से पूछताछ की जा रही है। हत्या के कारणों का स्पष्ट पता लगाने की कोशिश जारी है।

आरटीई के तहत अब 12वीं कक्षा तक के छात्रों को भी नि:शुल्क शिक्षा

जयपुर। अब निजी विद्यालयों में 12वीं कक्षा तक के छात्रों को भी निःशुल्क शिक्षा मिलेगी। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने शिक्षा का अधिकार (आरटीई) के तहत अध्ययनरत छात्रों की फीस पुनर्भरण के प्रस्ताव को स्वीकृति दी है। इस पर 46 करोड़ रुपए का व्यय होगा। आरटीई के माध्यम से कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों के लिए ही निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान है। श्री गहलोत द्वारा गत बजट में राज्य सरकार के खर्चे पर छात्राओं के लिए कक्षा 9 से 12वीं तक निजी विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा जारी रखने का प्रावधान किया था। इसी क्रम में अब छात्रों को भी कक्षा 1 से 12 तक आरटीई के तहत निजी विद्यालयों में प्रवेश लेने पर निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराई जाएगी। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री द्वारा वर्ष 2023-24 के बजट में इस संबंध में घोषणा की गई थी। राज्य सरकार द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए निरंतर अहम निर्णय लिए गए हैं।

प्रतापगढ़, जालौर और राजसमन्द में नवीन मेडिकल कॉलेज

जयपुर। राज्य सरकार आधारभूत चिकित्सा सेवाओं के सुदृढ़ीकरण तथा आमजन को बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाने की दिशा में कार्य कर रही है। इसी में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रतापगढ़, जालौर और राजसमंद में नवीन मेडिकल कॉलेज स्थापित करने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। प्रतापगढ़, जालौर और राजसमंद में राजमैस के अधीन नवीन मेडिकल कॉलेज स्थापित किए जाएंगे। प्रत्येक मेडिकल कॉलेज का निर्माण 250 करोड़ रुपए की लागत से होगा। साथ ही, इन कॉलेजों में आवश्यक उपकरण, फर्नीचर एवं पुस्तकों के लिए 75 करोड़ रुपए व्यय किए जाएंगे। गहलोत के इस निर्णय से प्रदेश में स्वास्थ्य ढांचा मजबूत होगा।

मौजूदा वक्त देया में एक्टिव कोविड केस अब 18,389

24 घंटे में कोरोना के 3824 केस, 5 की मौत

नई दिल्ली. केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार मामलों के मंत्रालय ने रविवार को कहा कि भारत में रविवार को बीते 24 घंटे में 3,824 नए कोविड-19 के नए मामले सामने आए हैं। बीते 24 घंटे में पांच और मरीजों ने दम तोड़ा है। मौजूदा वक्त देया में एक्टिव कोविड केस अब 18,389 हैं। कोरोनावायरस के आंकड़े पिछले दिन यानी शनिवार के आंकड़ों से 27 प्रतिशत अधिक है। यह आंकड़े पिछले 184 दिन यानी 6 महीने में सबसे ज्यादा हैं। साथ ही बीते 24 घंटे में पांच व्यक्तियों की कोरोना संक्रमण की वजह से मौत हो गई है। ताजे आंकड़ों के चलते एक्टिव कोविड केस अब 18,389 हैं जबकि वायरस का पता लगाने के लिए अब तक 1,33,153 टेस्ट किए गए है। देश में मौतों की संख्या बढ़कर 5.30 लाख से ज्यादा हो गई है। कोरोनावायरस संक्रमित लोगों का आंकड़ा कुल 4.47 करोड़ को पार कर गया है। केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार मामलों के मंत्रालय ने रविवार को कहा कि, भारत में रविवार को बीते 24 घंटे में 3,824 नए कोविड-19 के नए मामले सामने आए हैं। ताजे आंकड़ों के चलते एक्टिव कोविड केस अब 18,389 हैं। जबकि वायरस का पता लगाने के लिए 1,33,153 टेस्ट किए गए। डेली पॉजिटिविटी रेट 2.87 प्रतिशत और वीकली पॉजिटिविटी रेट 2.24 प्रतिशत है। एक्टिव केस 0.04 प्रतिशत और रिकवरी रेट वर्तमान में 98.77 प्रतिशत है। पिछले 24 घंटों में 1,784 लोग ठीक हुए हैं। जिससे कुल ठीक होने वालों की संख्या बढ़कर 4,41,73,335 हो गई है।

- देश में 6 महीने में पहली बार इतने मामले

पिछले 24 घंटे में देश में कोरोना के 3 हजार 824 नए केस दर्ज किए गए हैं। यह पिछले 184 दिन यानी 6 महीनों में सबसे ज्यादा हैं। इसके साथ ही एक्टिव केसेस की संख्या भी बढ़कर 18 हजार 389 हो गई। इस बीच, वायरस से 5 लोगों की जान भी गई है। देश में मौतों की संख्या बढ़कर 5.30 लाख से ज्यादा हो गई है। वहीं संक्रमित लोगों का आंकड़ा 4.47 करोड़ को पार कर गया है। दिल्ली में भी कोरोना के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, शनिवार को 416 नए केस दर्ज किए गए। यह पिछले 7 महीनों में सबसे ज्यादा हैं। जबकि पॉजीटिविटी रेट 14.37% है। बुलेटिन के मुताबिक, पिछले 24 घंटे में कोरोना से एक मरीज की मौत हुई है। दिल्ली में कोरोना से जान गंवाने वालों की संख्या अब 26 हजार 529 है। देश में मिल रहे डेली केस में 90% हिस्सेदारी 10 राज्यों की है। केरल में 884, महाराष्ट्र में 669, दिल्ली में 416, गुजरात में 372, हिमाचल में 354, कर्नाटक में 247, तमिलनाडु में 156, हरियाणा में 142, गोवा में 117 और उत्तर प्रदेश में 113 केश शामिल है। इन राज्यों का कुल आंकड़ा 3,470 है। यानी पिछले 24 घंटे में मिले केस के मुताबिक अकेले इन 10 राज्यों में 90% मरीज मिल रहे हैं। 24 घंटे में संक्रमण से 5 लोगों की मौत हुई है। इनमें केरल से दो, दिल्ली से एक, हरियाणा से एक और राजस्थान से दो मरीज शामिल हैं।

सम्पादकीय

संघ ने आने वाले समय के लिए अपनी प्राथमिकताएं तय कर दीं हैं

अभी हाल ही में संघ के कार्यों की समीक्षा एवं आगामी वर्ष 2023-24 के लिए संघ की कार्य योजना पर चर्चा करने हेतु संघ के प्रतिनिधि सभा की सबसे बड़ी बैठक हरियाणा के समालखा (जिला पानीपत) में दिनांक 12 मार्च से 14 मार्च 2023 तक सम्पन्न हुई है।भारत आज न केवल आर्थिक क्षेत्र में बल्कि राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी वैश्विक स्तर पर अपनी अलग पहचान कायम कर रहा है। चूंकि आज विश्व के कई देश विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझ रहे हैं एवं इन देशों को इन समस्याओं के हल हेतु कोई उपाय सूझ नहीं पा रहा है, अतः ये देश अपनी समस्याओं के हल हेतु भारत की ओर आशा भरी नजरों से देख रहे हैं। साथ ही, भारत आर्थिक रूप से भी हाल ही के समय में बहुत सशक्त होकर उभरा है। इस परिप्रेक्ष्य में यदि भारत को एक बार पुनः विश्व गुरु के रूप में स्थापित करना है तो प्राचीन भारत में जिस प्रकार महान भारतीय सनातन संस्कृति का पालन करते हुए भारत विश्व गुरु के रूप में स्थापित हुआ था, ठीक उसी प्रकार अब समय आ गया है कि न केवल भारत में बल्कि आज पूरे विश्व में ही शांति स्थापित करने के उद्देश्य से महान भारतीय संस्कृति का पालन किया जाय। महान भारतीय सनातन संस्कृति को वैश्विक स्तर तक पहुंचाने के लिए नागरिकों में ह्रस्वह्व का भाव जगाना आवश्यक होगा। यदि बड़ी संख्या में ऐसे नागरिक तैयार हो जाते हैं जिनमें ह्रस्वह्व का भाव विकसित हो चुका है तो ऐसी स्थिति में मां भारती को पुनः विश्व गुरु बनाना आसान होगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इस संदर्भ में पिछले 97 वर्षों से देश के नागरिकों में देश प्रेम की भावना का संचार कर उनमें ह्रस्वह्व का भाव जगाने का लगातार प्रयास कर रहा है। वर्ष 1925 (27 सितम्बर) में विजयदशमी के दिन संघ के कार्य की शुरूआत ही इस कल्पना के साथ हुई थी कि देश के नागरिक स्वाभिमानी, संस्कारित, चरित्रवान, शक्तिसंपन्न, विशुद्ध देशभक्ति से ओत-प्रोत और व्यक्तिगत अहंकार से मुक्त होने चाहिए। आज संघ, एक विराट रूप धारण करते हुए, विश्व में सबसे बड़ा स्वयं सेवी संगठन बन गया है। संघ के शून्य से इस स्तर तक पहुंचने के पीछे इसके द्वारा अपनाई गई विशेषताएं यथा परिवार परंपरा, कर्तव्य पालन, त्याग, सभी के कल्याण विकास की कामना व सामूहिक पहचान आदि विशेष रूप से जिम्मेदार हैं। संघ के स्वयंसेवकों के स्वभाव में परिवार के हित में अपने हित का सहज त्याग तथा परिवार के लिये अधिकाधिक देने का स्वभाव व परस्पर आत्मीयता और आपस में विश्वास की भावना आदि मुख्य आधार रहता है। ह्रवसुधैव कुटुंबकमह्व की मूल भावना के साथ ही संघ के स्वयंसेवक अपने काम में आगे बढ़ते हैं।

अभी हाल ही में संघ के कार्यों की समीक्षा एवं आगामी वर्ष 2023-24 के लिए संघ की कार्य योजना पर चर्चा करने हेतु संघ के प्रतिनिधि सभा की सबसे बड़ी बैठक हरियाणा के समालखा (जिला पानीपत) में दिनांक 12 मार्च से 14 मार्च 2023 तक सम्पन्न हुई है। इस बैठक में भारत के नागरिकों में ह्रस्वह्व के भाव के महत्व को रेखांकित करते हुए एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किया गया है। इस प्रस्ताव में बताया गया है कि ह्रविश्व कल्याण के उदात्त लक्ष्य को मूर्त रूप प्रदान करने हेतु भारत के ह्रस्वह्व की सुदीर्घ यात्रा हम सभी के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रही है। विदेशी आक्रमणों तथा संघर्ष के काल में भारतीय जनजीवन अस्त-व्यस्त हुआ तथा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व धार्मिक व्यवस्थाओं को गहरी चोट पहुंची। इस कालखंड में पूज्य संतों व महापुरुषों के नेतृत्व में संपूर्ण समाज ने सतत संघर्षरत रहते हुए अपने ह्रस्वह्व को बचाए रखा। इस संग्राम की प्रेरणा स्वधर्म, स्वदेशी और स्वराज की ह्रस्वह्व त्रयी में निहित थी, जिसमें समस्त समाज की सहभागिता रही ह्र अरब देशों के आक्रांताओं एवं अंग्रेजों ने भारतीय जनमानस में ह्रस्वह्व के भाव को समाप्त करने के अथक प्रयास किए परंतु चूंकि वे इसमें पूर्ण रूप में असफल रहे इसलिए ही भारतीय संस्कृति आज भी जीवित है वरना ग्रीक एवं यूनान जैसी कई प्राचीन संस्कृतियां विश्व पटल से आज मिट गई हैं।

इसी प्रस्ताव में आगे कहा गया है कि ह्रस्वाधीनता प्राप्ति के उपरांत हमने अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की हैं। आज भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनकर उभर रही है। भारत के सनातन मूल्यों के आधार पर होने वाले नवोत्थान को विश्व स्वीकार कर रहा है। ह्रवसुधैव कुटुम्बकमह्व की अवधारणा के आधार पर विश्व शांति, विश्व बंधुत्व और मानव कल्याण के लिए भारत अपनी भूमिका निभाने के लिए अग्रसर है।साथ ही, संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह स्पष्ट मत है कि ह्रसुसंगठित, विजयशाली व समृद्ध राष्ट्र बनाने की प्रक्रिया में समाज के सभी वर्गों के लिए मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति, सर्वांगीण विकास के अवसर, तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग एवं पर्यावरणपूरक विकास सहित आधुनिकीकरण की भारतीय संकल्पना के आधार पर नए प्रतिमान खड़े करने जैसी चुनौतियों से पार पाना होगा। राष्ट्र के नवोत्थान के लिए हमें परिवार संस्था का दृढ़ीकरण, बंधुता पर आधारित समरस समाज का निर्माण तथा स्वदेशी भाव के साथ उद्यमिता का विकास आदि उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विशेष प्रयास करने होंगे। इस दृष्टि से समाज के सभी घटकों, विशेषकर युवा वर्ग को समन्वित प्रयास करने की आवश्यकता रहेगी।

माइंस विभाग द्वारा 7211 करोड़ 69 लाख रुपए का सर्वकालिक रेकार्ड राजस्व अर्जित

जयपुर। राज्य के माइंस विभाग ने राजस्व अर्जन में सर्वकालिक कीर्तिमान स्थापित किया है। अतिरिक्त मुख्य सचिव माइंस डॉ. सुबोध अग्रवाल ने बताया कि 31 मार्च को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष में आरंभिक सूचना के अनुसार माइंस विभाग द्वारा 7211 करोड़ 69 लाख रुपए का रेकार्ड राजस्व अर्जित किया गया है। उन्होंने बताया कि यह अब तक का किसी एक वित्तीय वर्ष का सर्वाधिक राजस्व अर्जन होने के साथ ही गत वित्तीय वर्ष 2021-22 से 816 करोड़ रु. से भी अधिक है। खान एवं गोपालन मंत्री प्रमोद जैन भाया ने रेकार्ड राजस्व अर्जन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह राज्य सरकार की पारदर्शी कार्यप्रणाली, प्रभावी मोनेटरिंग, टीम भावना और समन्वित प्रयासों का परिणाम रहा है। उन्होंने राजस्व अर्जन के सर्वकालिक कीर्तिमान स्थापित करने के लिए एसीएस डॉ. सुबोध अग्रवाल, निदेशक श्री संदेश नायक व विभाग के अधिकारियों व कार्मिकों को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि एसीएस डॉ. सुबोध अग्रवाल के स्वयं के स्तर पर और निदेशक श्री संदेश नायक के साथ निरंतर मोनेटरिंग, हौशला अफजाई और टीम भावना से काम करने से विभाग द्वारा यह विशेष उपलब्धि अर्जित की जा सकी है। एसीएस माइंस, पेट्रोलियम एवं पीएचईडी डॉ. सुबोध अग्रवाल ने बताया कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के वैध खनन को बढ़ावा देने और अवैध खनन पर प्रभावी कार्यवाही के निर्देश और खान मंत्री प्रमोद जैन भाया के मार्गदर्शन में विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धि अर्जित की है। उन्होंने बताया कि विभाग द्वारा राजस्व छीजत पर प्रभावी अंकुश लगाने के लिए अवैध खनन, परिवहन व भण्डारण पर रोक के लिए जहां अभियान चलाकर कार्यवाही की वहीं, वैध खनन को प्रोत्साहित करने के लिए माइनर और मेजर मिनरल्स की ई नीलामी का भी नया रेकार्ड बनाया है। उन्होंने बताया कि गत वित्तीय वर्ष के 6395 करोड़ रु. के राजस्व अर्जन के विरुद्ध दो दिन पूर्व 31 मार्च, 23 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष में 7211 करोड़ 69 लाख का राजस्व अर्जित किया है। डॉ. अग्रवाल ने बताया कि आरएसएमईटी, एमएमईटी और डीएमएफटी में जमा राशि इसके अतिरिक्त है। उन्होंने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार के कार्यकाल में माइंस विभाग के राजस्व संग्रहण में उत्तरोत्तर बढ़ोतरी हुई है। 2019-20 में 4579 करोड़ 09 लाख रु., 2020-21 में 4966 करोड़ 39 लाख रु, 2021-22 में 6395 करोड़ 15 लाख रु और 2022-23 में 7211 करोड़ 69 लाख रु. का राजस्व संग्रहित हुआ है। उन्होंने बताया कि प्रदेश के माइनर व मेजर ब्लॉकों की प्रीमियम दरों पर नीलामी होने लगी है जो शुभ संकेत है। निदेशक माइंस संदेश नायक ने बताया कि विभाग द्वारा मार्च माह में ही एक हजार करोड़ रु. का राजस्व संग्रहित किया है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में सर्वाधिक 2006 करोड़ से अधिक का राजस्व भीलवाड़ा वृत में संग्रहित किया गया है वहीं राजसमंद वृत में 1310 करोड़ 93 लाख, जोधपुर वृत में 942 करोड़, उदयपुर वृत में 746 करोड़, जयपुर वृत में 626 करोड़, कोटा वृत में 270 करोड़ और भरतपुर वृत में 251 करोड़ व अन्य 50 करोड़ से अधिक का राजस्व अर्जित किया है।

मंदिर में हनुमान जन्मोत्सव की तैयारी शुरू

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा

कुशलगढः खेड़ा धरती के छोटी सरवा में पहली बार हनुमान जन्मोत्सव 6 अप्रैल 2023 गुरुवार को उजाला ग्रुप के नेतृत्व में सुंदरकांड, गरबा, भजन संध्या एव प्रसादी का भव्य आयोजन किया गया है। सिद्धेश्वर रामायण मंडल काकनवानी द्वारा भजनों की प्रस्तुति दी जाएगी और राहुल भाई एण्ड पार्टी द्वारा सुंदरकांड रात्रि 8:30 पर चालू हो जायेगी। हनुमान जन्मोत्सव की तैयारी शुरू कर दी गई है। आयोजन मंडल के सदस्य हनुमान जन्मोत्सव को भव्य बनाने की तैयारी कर रहे है। उस दिन मंदिर परिसर में कई कार्यक्रम का आयोजन होगा।आयोजन को सफल बनाने में हनुमान जन्मोत्सव आयोजक समिति के सहयोजक रिक्की उपाध्याय राहुल सिसोदिया दक्ष पंचाल जयदीप राठौड़ आनद प्रजापत सनी वर्मा पंकज प्रजापत लोकेश अतुल सहित अन्य लोग लगे हैं।

मातृशक्ति दुर्गा वाहिनी की बहनों द्वारा शनिवार को प्रोफेसर कॉलोनी मैं सामूहिक रूप से हनुमान चालीसा भजन कीर्तन किया

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा

बांसवाड़ाः विश्व हिंदू परिषद बांसवाड़ा की मातृशक्ति दुर्गा वाहिनी की बहनों द्वारा शनिवार को शाम 8.00 बजे प्रोफेसर कॉलोनी मैं सामूहिक रूप से श्री हनुमान चालीसा श्री राम जी की स्तुति भजन कीर्तन एवं देश भक्ति के गीत व जय घोष किया गया कार्यक्रम के अंत में प्रसाद का वितरण किया गया है। विश्व हिंदू परिषद बांसवाड़ा के जिला प्रचार व प्रसार प्रमुख तरुण कुमार अडीचवाल ने बताया कि उक्त कार्यक्रम में दुर्गा वाहिनी की जिला संयोजिका साक्षी दक मातृशक्ति जिला सत्संग प्रमुख मिथलेश कौशिक दुर्गा वाहिनी जिला बाल संस्कार प्रमुख साधना देवड़ा भगवती तेली हनसा कलाल नानी बाई तेली सीमा तंबोली ललिता तेली आशा तेली मीना सोनी संगीता तेली इंदिरा प्रजापत अनीता तेली रेखा जैन कलावती कलाल शांति तेली रेखा सुथार सविता तेली आदि बहनों ने उक्त कार्यक्रम में भाग लिया। ये जानकारी तरुणकुमार अडीचवाल जिला प्रचार व प्रसार प्रमुख विश्व हिंदू परिषद बांसवाड़ा ने दी।

महावीर को जीवन का हिस्सा बनाएं, जीवन में ढालें

भगवान महावीर सामाजिक एवं व्यक्तिक्रांति के शिखर पुरुष थे। महावीर का दर्शन अहिंसा और समता का ही दर्शन नहीं है बल्कि क्रांति का दर्शन है। उनकी क्रांति का अर्थ रक्तपात नहीं! क्रांति का अर्थ है परिवर्तन। क्रांति का अर्थ है जागृति! क्रांति अर्थात स्वस्थ विचारों की ज्योति! क्रांति का अर्थ आग नहीं, सत्य और पूर्णता की ओर बढ़ना क्रांति है। इस दिशा में स्वयं बढ़ना क्रांति कहलाती है। जिसे वीर पुरुष सत्यपथ मानता है, उस ओर जिस समय वह अपने युग के समाज को भी आगे बढ़ाता है तब वह क्रांतिकारी कहलाता है। भगवान महावीर इस अर्थ में क्रांतिकारी थे। महावीर ने केवल धर्म तीर्थ का ही प्रवर्तन ही नहीं किया बल्कि एक उन्नत और स्वस्थ समाज के लिए नये मूल्य-मानक गढ़े। उन्होंने प्रगतिशील विचारों को सही दिशा ही नहीं दी बल्कि उनमें आये ठहराव को तोड़कर नयी क्रांति का सूत्रपात किया। महावीर जन्म से महावीर नहीं थे। उन्होंने जीवन भर अनगिनत संघर्षों को झेला, कष्टों को सहा, दुख में से सुख खोजा और गहन तप एवं साधना के बल पर सत्य तक पहुंचे, इसलिये वे हमारे लिए आदर्शों की ऊंची मीनार बन गये। उन्होंने समझ दी कि महानता कभी भौतिक पदार्थों, सुख-सुविधाओं, संकीर्ण सोच एवं स्वार्थी मनोवृत्ति से नहीं प्राप्त की जा सकती उसके लिए सच्चाई को बटोरना होता है, नैतिकता के पथ पर चलना होता है और अहिंसा की जीवन शैली अपनानी होती है। महावीर जयन्ती मनाने हुए हम केवल महावीर को पूजे ही नहीं, बल्कि उनके आदर्शों को जीने के लिये संकल्पित हो।

महावीर ने जन-जन को समता के उपदेशामृत से आप्लावित ही नहीं किया किन्तु स्वयं के जीवन में जीया। वे जिस युग में जन्मे उस समाज रूपी वट-वृक्ष को विषमता की विष वल्लरियां आवेष्टित कर चुकी थी। जाति और वर्ण के नाम पर वह बंटा हुआ था। व्यक्ति को ऊंचा और नीचा उसके चरित्र और शील से नहीं अपितु जन्म के आधार पर माना जाता था। अभिजात्यता का पैरामीटर जाति और कुल थे उसके आचरण नहीं। वैभव और सम्पत्ति में केवल रुपये, सोना, चांदी, जवाहरात ही नहीं अपितु मनुष्यों को भी गिना जाता था। ह्यह्यकिसके पास कितने दास-दासी हैं?ह्लह्ल यह भी सम्पन्नता का मापदण्ड था। फलतः दासप्रथा का प्रचलन धड़ल्ले से पनप रहा था। जब मनुष्य-मनुष्य के बीच भी इतनी विषमताएं समाज सम्मत थी तब निरीह पशु-पक्षियों और सूक्ष्म प्राणियों की ओर ध्यान देना या उनके सुख-दुःख का अहसास करना समझ से बाहर की बात थी। इन्हीं स्थितियों में नारी उत्पीड़न, दास-प्रथा, जातिवाद, बढ़ती हुई क्रूरता और सामाजिक विषमता साधारण बात थी। इन स्थितियों ने महावीर को उद्वेलित

कर दिया। ऐसे विषमता एवं विसंगतिया भरे युग में क्षत्रिय कुण्डनपुर के राजा सिद्धार्थ और महारानी त्रिशला के घर-आंगन में एक तेजस्वी शिशु ने जन्म लिया। वह शुभ वेला थी-चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की मध्य रात्रि। गभार्धान के साथ ही बढ़ती हुई सुख सम्पदा को देख बालक का नामकरण किया गया-वर्धमान। जिसके साए में था मानवता का प्यार-दुलार और समता का संसार। नन्हें शिशु के अबोले पर सक्षम आभामण्डल का ही प्रभाव था कि पुत्र जन्म की बधाई देने वाली दासी प्रियंवदा को आभूषणों का उपहार ही नहीं मिला पर महाराजा सिद्धार्थ ने सदा-सदा के लिए उसे दास्य कर्म से मुक्त कर दिया। जैन धर्म के अनुसार कोई भी तीर्थंकर अतिमानव अवतार के रूप में नहीं अपितु सामान्य व्यक्तियों की तरह ही जन्म लेते हैं।

क्षत्रिय कुण्डनपुर नगर के क्षत्रिय नरेश सिद्धार्थ के राजप्रसाद में जन्म लेने पर भी महावीर के मन में शाही वैभव के प्रति कोई आकर्षण नहीं था। शोषण और संग्रह की त्रासदी से पीड़ित लोकजीवन को हिंसा और परिग्रह के अल्पीकरण का पथ दिखाकर उन्होंने मनुष्य के हाथ में निरंकुश वृत्तियों की लगाम थमा दी। किसी गृहवासी को संन्यास की ओर ढकेलना उनका लक्ष्य नहीं था। वे व्यक्ति की शक्ति और रुचि के अनुसार उसे साधना की प्रक्रिया बताते थे। संसार के विरक्त व्यक्तियों को उन्होंने हिंसा, असत्य, चोरी, अब्रह्मचर्य और परिग्रह से सर्वथा मुक्त रहने का उपदेश दिया किन्तु जिनमें इतनी क्षमता नहीं थी, उन्हें हिंसा और परिग्रह को सीमित करने, परिहार्य असत्य और चोरी से बचने तथा विवाहित स्त्री और पुरुष के अतिरिक्त ब्रह्मचर्य का पालन करने की दिशा दिखाई। इससे असीमित भोग और संग्रह पर प्रतिबंध लग गया तथा निष्प्रयोजन होने वाली असत प्रवृत्ति रुक गई।

महावीर जन्म से ही अतीन्द्रिय ज्ञानी थे। उन्होंने कहा तुम जो भी करते हो- अच्छा या बुरा, उसके परिणामों के तुम खुद ही जिम्मेदार हो। अपने ज्ञान से उन्होंने प्राणी मात्र में चैतन्य की धारा प्रवाहित होते हुए महसूस की। कभी-कभी वे अपने इर्द-गिर्द रहने वालों को इसकी अभिव्यक्ति भी दे देते। अक्सर वे कहा करते थे- सुख-दुख के तुम स्वयं सर्जक हो। भाग्य तुम्हारा हस्ताक्षर है। कभी किसी निरपराध या अभावग्रस्त व्यक्ति की दासता उनके कोमल दिल को कचोट जाती तो कहीं अहं और दर्प में मदहोश सत्तासीन व्यक्तियों का निर्दयतापूर्ण क्रूर व्यवहार उनके मृदु मानस को आहत कर देता। वे गहरे मानवीय संवेदना के चितेरे थे। महावीर घण्टों-घण्टों तक अपने समय की समस्याओं का समाधान पाने चिंतन की डुबकियों में खो जाते। तीस वर्ष की युवावस्था में सहज रूप से प्राप्त सत्ता वैभव और परिवार को सर्प कंचुकीवत छोड़ साधना के दुष्कर मार्ग पर सत्य की उपलब्धि के लिए दृढ़ संकल्प के साथ चल पड़े। बारह वर्ष से भी अधिक अवधि तक शरीर को भुला अधिक से अधिक चैतन्य के इर्द-गिर्द आपकी यात्रा चलती रही। ध्यान की अतल गहराइयों में डुबकियां लगाते हुए सत्य सूर्य का साक्षात्कार हुआ। वे सर्वज्ञ व सर्वदर्शी बन गये वह पावन दिन था वैशाख शुक्ला दशमी। लक्षित मंजिल उपलब्ध हो चुकी थी। इसी अनुभूत सत्य को आपने जन-जन तक पहुंचाने में उपदेशामृत की धार बहाई। वह अमृत सबके लिए समान रूप से था। उसमें जाति, वर्ण, रंग, लिंग, अमीर, गरीब की भेदरेखाएं नहीं थी। अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार हर कोई उसे उपलब्ध कर सकता था।

महावीर ने आकांक्षाओं के सीमाकरण की बात कही। उन्होंने कहा मूर्च्छा परिग्रह है उसका विवेक करो। आज की समस्या है-पदार्थ और उपभोक्ता के बीच आवश्यकता और उपयोगिता की समझ का अभाव। उपभोक्तावादी संस्कृति महत्वाकांक्षाओं को तेज हवा दे रही है, इसीलिए जिंदगी की भागदौड़ का एक मकसद बन गया है- संग्रह करो, भोग करो। महावीर की शिक्षाओं के विपरीत हमने मान लिया है कि संग्रह ही भविष्य को सुरक्षा देगा। जबकि यह हमारी भूल है। जीवन का शाश्वत सत्य है कि इंद्रियां जैसी आज है भविष्य में वैसी नहीं रहेगी। फिर आज का संग्रह भविष्य के लिए कैसे उपयोगी हो सकता है? क्या आज का संग्रह कल भोगा जा सकेगा जब हमारी इंद्रिया अक्षम बन जाएंगी।

महावीर का दर्शन था खाली रहना। इसीलिए उन्होंने जन-जन के बीच आने से पहले, अपने जीवन के अनुभवों को बांटने से पहले, कठोर तप करने से पहले, स्वयं को अकेला बनाया, खाली बनाया। तप तपा। जीवन का सच जाना। फिर उन्होंने कहा अपने भीतर कुछ भी ऐसा न आने दो जिससे भीतर का संसार प्रदूषित हो। न बुरा देखो, न बुरा सुनो, न बुरा कहो। यही खालीपन का संदेश सुख, शांति, समाधि का मार्ग है। दिन-रात संकल्पों-विकल्पों, सुख-दुख, हर्ष-विषाद से घिरे रहना, कल की चिंता में झुलसना तनाव का भार ढोना, ऐसी स्थिति में भला मन कब कैसे खाली हो सकता है? कैसे संतुलित हो सकता है? कैसे समाधिस्थ हो सकता है? इन स्थितियों को पाने के लिए वर्तमान में जीने का अभ्यास जरूरी है। न अतीत की स्मृति और न भविष्य की चिंता। जो आज को जीना सीख लेता है, समझना चाहिए उसने मनुष्य जीवन की सार्थकता को पा लिया है और ऐसे मनुष्यों से बना समाज ही संतुलित हो सकता है, स्वस्थ हो सकता है, समतामूलक हो सकता है। जरूरत है उन्नत एवं संतुलित समाज निर्माण के लिए महावीर के उपदेशों को जीवन में ढालने की। महावीर-सी गुणात्मकता को जन-जन में स्थापित करने की। ऐसा करके ही समाज को स्वस्थ बना सकेंगे। कोरा उपदेश तक महावीर को सीमित न बनाएं, बल्कि महावीर को जीवन का हिस्सा बनाएं, जीवन में ढालें।

भगवान महावीर एक कालातीत संस्कृति

भारतीय संस्कृति ऋषि और कृषि प्रधान संस्कृति रही है। समय-समय पर विभिन्न ऋषियों, मुनियों संन्यासियों और पैगम्बरों ने अवतार लेकर इस धरा को पुनीत एवं पावन बनाया। उसी परम्परा में जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर का नाम भी तेजस्वी सूर्य की तरह है, जिन्होंने अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर करके कण-कण को आलोक से आपूरित किया। वे राजवंशीय भौतिक वातावरण में जन्म लेकर भी उस भोगवादी संस्कृति के अनुगामी नहीं बनें। संन्यस्त जीवन की बीहड़ राह पर चरणन्यास कर के उस राह को एक ऐसा राजपथ बना दिया, जिस पर चलने वाले हर व्यक्ति भगवान् के प्रतिरूप बनें।

उनके वर्द्धमान से महावीर बनने की यात्रा पुरुषार्थ की सफलतम यात्रा है। भौतिकता से अभौतिकता की, लौकिकता से अलौकिकता की तथा विकृति से संस्कृति की दिव्य निशानी है। जब-जब उनके जीये हुये जीवन पृष्ठों को पढ़ने की कोशिश करते हैं, तब एक स्वाभाविक प्रश्न उभरता है कि भौतिक सम्पदा से युक्त राजकुल परिवार में जन्म लेकर भी उन्होंने अकिंचन परिव्राजक का जीवन क्यों अंगीकार किया? अपने अग्रज भाई की मनुहारों को क्यों अस्वीकृत कर दिया? उनको अपनी पत्नी और बेटी का मोह क्यों नहीं लुभाया? ऐसे कई प्रश्न जिज्ञासु मन में उभर सकते है। मेरी दृष्टि में इनका एक ही समाधान हो सकता है कि जिनके मन में सम, षम और श्रम की लौ प्रज्ज्वलित हो जाती है, वे हवां की अनुकूलता की देखे बिना प्रतिस्रोतगामी बनते है।

भगवान् महावीर की जीवनगाथा संघ साधना, समर्पण, संकल्प, सहिष्णुता की अमीर स्याही से लिखित थी जो आज भी अमरता का संदेश देती है। उनकी साधकता की वीणा में जहां आत्मा के मृदु गीत स्फुरित होते हैं, वहाँ सामाजिकता, पारिवारिकता के वातावरण को स्वस्थ बनाने बीज भी प्रस्फुटित हो रहे हैं।

वे अहिंसा के पुरोधा थे, इसलिये उन्होंने कहा-ह्यह्यसव्वे जीवा वि

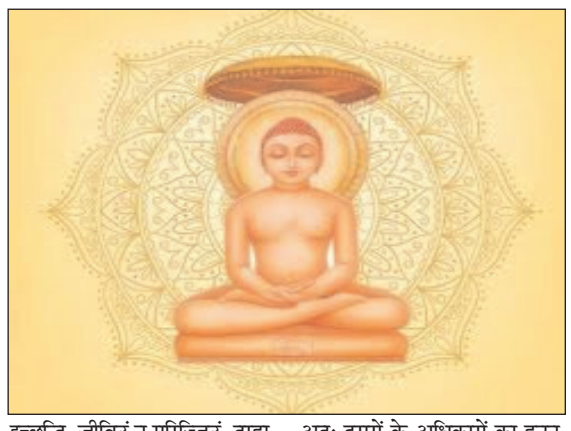

इच्छन्ति, जीविउं न मरिज्जिउं, तम्हा पाण वहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं।ह्लह्ल प्रत्येक प्राणी चाहे वह छोटे से छोटा कीट पतंगा भी क्यों नहीं हो उनमें भी मनुष्य जैसी आत्मा की संजीवता है। वह भी सुख का इच्छुक और मृत्यु से भी भयभीत रहता है। उन्होंने एक शाश्वत सत्य को उजागर करते हुये कहा कि जैसे मुझे जीने का अधिकार है, वैसे दूसरों को भी है। अतः दूसरों के अधिकारों का हनन करना हिंसा है। वे अपनी अहिंसा के माध्यम से पर्यावरण सुरक्षा की बात कही। बढ़ते हुये औद्योगिककरण से वन दोहन पानी और वायु का प्रदूषण सम्पूर्ण विश्व के समक्ष एक समस्या है। इसलिये उन्होंने पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति भै में जीवों की प्ररूपणा करके उनके बचाव और सुरक्षा को अहमियता प्रदान की। वार्तमानिक युग युद्ध और आतंक के दहशत से कांप रहा है। ऐसी स्थिति में महावीर की अहिंसा प्रेम, शान्ति और अभयता की वर्षा करके मानव मन की पीड़ा को दूर कर रही है।

भगवान् महावीर ने अपरिग्रह के जरिये देश, समाज एवं परिवार में पनप रही आर्थिक विषमता को समतल धरातल दिया। वस्तुतः जहां एक तरफ धन का अंबार हो तथा एक तरफ भूखमरी हो, वहां समरसता कैसे पनप सकती है? आर्थिक विषमता समस्त बुराइयों की जनक है। उपयोग के साधन पर एकाधिकार होना, बाह्य आडम्बर पर पानी की तरह पैसा बहाना, अनैतिक कार्यों से घन संग्रह करना आदि बिन्दु समाज की नीवों की कमजोर करता है। यह सच्चाई है कि पैसे से रोटी खरीद सकते है, भूख नहीं, दवाई खरीद सकते है, पर मौत नहीं, मकान खरीद सकते हैं, पर भाईचारा नहीं। अतः ऋषियों द्वारा परिभाषित वाणी सन्तोष ही परम सुख में अपरिग्रह की आत्मा निहित है।

महावीर का अनेकान्तवाद समन्वय का वातावरण सर्जित करता है। व्यक्ति की आग्रहवृत्ति, कलह, विद्वेष, तथा आवेश को संपुष्ट करती है। परिणामतः वह अपने से समझ दूसरे को बौना समझता है और दूसरों के सहअस्तित्व को नकार देता है। यह महावीर का यह संदेश ह्यमहावीर का यह संदेश बड़े-छोटे, अणु-महान् लघु-विशाल सबको अपने- पराये, तथा अस्तित्व-नास्तित्व को अपनी भूमिका में प्रतिष्ठित करके एक साथ पनपने का स्थान देता है। महावीर ने कहा- एक दृष्टिकोण से मैं सही हूँ तो दूसरे दृष्टिकोण से तुम भी सही हो। उन्होंने अनेकान्त के धागे से टूटते परिवार, राष्ट्र, समाज और रिश्तों को बांधा। इसीलिये महावीर का अन्तःकरण कालातीत, देशातीत और नामातीत है। अतीत में महावीर के संदेशों की जितनी अपेक्षा थी, आज भी उससे ज्यादा है।

महान समाज सुधारक कमलादेवी चट्टोपाध्याय

देश में स्वतंत्रता की अलख जगाने वाले अनगिनत सेनानियों में कुछ ऐसे भी है जो विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अप्रतिम सेवाओं के लिए आज भी याद किये जाते है। इनमें एक महान समाज सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी कमलादेवी चट्टोपाध्याय भी है जिन्होंने देश की हस्तकला को नवजीवन प्रदान किया था। आज उनकी जयंती है। वह सारस्वत ब्राह्मण समुदाय की पहली महिला थीं, जिन्होंने विधवा होने के बाद शादी की और कानूनी तौर पर तलाक प्राप्त किया। वे स्वतंत्रता संग्राम में गिरफ्तार होने वाली पहली भारतीय महिला स्वतंत्रता सेनानी थी। कमला देवी ही थी जिन्होंने गांधीजी को आजादी के आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी के लिए राजी किया। भारत की महान स्वतंत्रता सेनानी और सुधारक कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने हथकरघा और हस्तशल्पि उद्योग को एक नई दिशा देते हुए महिलाओं की सामाजिक आर्थिक भागीदारी को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे आजादी से पूर्व विधानसभा चुनाव लड़ने वाली पहली महिला थी। कमलादेवी का 3 अप्रैल 23 को 120वां जन्मदिवस है। चट्टोपाध्याय को न केवल भारत की आजादी के संग्राम में उनके अप्रतिम योगदान के लिए याद किया जाता है। बल्कि आजाद भारत में हैंडीक्राफ्ट, हैंडलूम्स और थिएटर की स्थिति में सुधार में उनके योगदान के चलते भी याद किया जाता है। कमलादेवी ने सहकारिता आंदोलन के जरिए भारतीय महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर को बेहतर बनाने के लिए भी खूब काम किया। राजधानी दिल्ली में स्थित थिएटर इंस्टीट्यूट नैशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, संगीत नाटक अकादमी, सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज इंपोरियम और क्राफ्ट्स काउंसिल ऑफ इंडिया जैसे मशहूर संस्थानों को बनाने में भी उनकी अहम भूमिका रही है। उन्हें भारत में म्यूजिक, डांस और ड्रामा की नैशनल अकेडमी, संगीत नाटक अकादमी से सर्वोच्च सम्मान संगीत नाटक अकेडमी फेलोशिप भी मिली। कमलादेवी का जन्म कर्नाटक के सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में 3 अप्रैल, 1903 में हुआ था। इनके पिता मंगलोर के डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर थे। कमलादेवी जब सिर्फ सात साल की ही थीं, उसी समय उनके पिता का निधन हो गया था। कमलादेवी की 14 साल की उम्र में ही शादी कर दी गई थी। लेकिन दो साल बाद ही उनके पति कृष्ण राव की मौत हो गई। बाद में उन्होंने हरेन्द्रनाथ से विवाह रचाया। कमलादेवी पति हरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय के साथ लंदन चली गई थीं। लेकिन जब 1923 में उन्हें गांधीजी के असहयोग आंदोलन के बारे में पता चला तो वे भारत आ गईं और आजादी के आंदोलन में कूद गईं। उन्होंने गांधीजी के नमक सत्याग्रह में भी हिस्सा लिया था। नमक कानून तोड़ने के मामले में बांबे प्रेसीडेंसी में गिरफ्तार होने वाली वे पहली महिला थीं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान वे चार बार जेल गईं और पांच साल तक सलाखों के पीछे रहीं। इसी बीच हरेंद्रनाथ से उनका तलाक हो गया। आजादी के बाद देश का विभाजन हो गया था और शरणार्थियों को बसाने के लिए जगह की तलाश थी, उस समय कमलादेवी ने गांधीजी से अनुमति लेकर टाउनशिप बसाने का जिम्मा लिया। फरीदाबाद को बसाने श्रेय उन्हें है। कमलादेवी ने फिल्मों में भी हाथ आजमाया था। वे दो साइलेंट फिल्मों में नजर आई थीं। इसमें से एक कन्नड़ फिल्म इंडस्ट्री की पहली साइलेंट फिल्म थी। इसका नाम था ह्यमृच्छकटिका (1931)। लंबे समय बाद वे एक बार फिल्मों में नजर आईं। वे ह्यतानसेन फिल्म में के.एल. सहगल और खुर्शीद के साथ नजर आईं। उसके बाद कमलादेवी नेह्यशंकर पार्वती (1943)ह्ल और ह्यधन्ना भगत (1945)ह्ल जैसी फिल्में भी की। देश के विभाजन के बाद उन्होंने शरणार्थियों के पुनर्वास में अपने आप को लगा दिया। वो गांधी जी, जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद, सरोजनी नायडू तथा कस्तूरबा गांधी से बहुत प्रभावित थीं। कमलादेवी चट्टोपाध्याय को 1955 में भारत का उच्च सम्मान पद्म भूषण दिया गया। इसके बाद 1987 में पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया गया था। 1966 में उन्हें ह्यरेमन मैगसेसे पुरस्कार भी दिया गया। 29 अक्टूबर, 1988 में वे स्वर्गवासी हो गईं।

महावीर प्रसाद जांगिड़ बने जांगिड़ समाज के तहसील अध्यक्ष

मरुधर विशेष/जिला रिपोर्टर हवासिंह चौधरी

बहरोड़।अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा के तहसील अध्यक्ष के चुनाव आज रविवार को संपन्न हुए जिसमें 577 मे से कुल 463 मत पड़े। जिसमें 69मतो से महावीर जांगिड़ विजयी हुये। पर्यवेक्षक मामराज जांगिड़ ने बताया कि आज तहसील महासभा के चुनाव संपन्न हुए जिसमें 2 प्रत्याशियों ने भाग लिया एक लीला राम जांगिड़ वहीं दूसरी ओर महावीर प्रसाद जिस मे 265 वोट महावीर को मिले और 196 लीलाराम जांगिड़ को मिले। इस दौरान जांगिड़ समाज के सैकड़ों कार्यकताओं ने विश्वकर्मा भगवान की जय घोष के साथ महावीर प्रसाद के फूल माला व साफा पहनाकर मिठाई बांटी गई। इस दौरान पुर्व प्रधान रमेश चंद जांगिड़, संजय शर्मा प्रधानाध्यापक, संरक्षक दयावंत जांगिड़, डॉक्टर शिवराम जांगिड़, पूर्ण चंद शर्मा प्रचार मंत्री महासभा, मदनलाल जांगिड़, प्रीतम जांगिड़, घनश्याम जांगिड़ कार्यवाहक अध्यक्ष छात्रावास, कैलाश चंद जांगिड़, धन सिंह जांगिड़, कारपेंटर एसोसिएशन अध्यक्ष मदनलाल जांगिड़, बनारसी लाल जांगिड़, रामजी लाल जांगिड़, महेंद्र जांगिड़ कोलिला, निरंजन जांगिड़, योगेश कुमार जांगिड़, देवेंद्र कुमार जांगिड़, संदीप जांगिड़, सहित जांगिड़ समाज के सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

पुलिस ने छींड से बरामद की चोरी की 26 बकरियां

मरुधर हिन्द/रमाकान्त शर्मा

बानसूर - उपखंड के गांव छींड़ में थाना पुलिस हरसोरा के द्वारा किशनगढ़ बास थाना क्षेत्र से चोरी हुई 26 बकरियों को बरामद किया। हरसोरा थाना प्रभारी राजेश कुमार मीणा ने बताया कि पुलिस गश्त के दौरान एक युवक धोलाराम निवासी बेहरोज जो पुलिस गाड़ी को देखकर भागने लगा। इस पर पुलिस टीम को शक हुआ और पुलिस ने उसका पीछा किया लेकिन अपराधी सघन जंगलों का फायदा उठाकर छुप गया। लेकिन पुलिस टीम द्वारा उसके दो साथियों पवन उर्फ पीके एवं राजेश निवासी बेहरोज को पकड़कर पूछताछ करने पर किशनगढ़ बास थाना क्षेत्र के गांव तरवाला से बकरियां चोरी करना मालूम हुआ। फिर हरसौरा थाना पुलिस द्वारा किशनगढ़ बास थाना पुलिस से संपर्क कर जानकारी प्राप्त की । इस पर किशनगढ़ बास पुलिस मौके पर पहुंची और हरसौरा थाना पुलिस टीम द्वारा चोरी की हुई 26 बकरियां बरामद करवाकर सुपुर्द की ।

अमेठी पुलिस द्वारा चोरी के अभियोग में वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

मरुधर विशेष/संवाददाता शिवकुमार मौर्य

उत्तर प्रदेश जनपद अमेठी में अपराध एवं अपराधियों के धर पकड़ हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में दिनांक 02.04.2023 को का0 शैलेन्द्र यादव थाना अमेठी मय हमराही द्वारा देखभाल क्षेत्र के दौरान मुखबिर की सूचना पर मु0अ0सं0 80/23 धारा 457,380 भादवि, मु0अ0सं0 83/23 धारा 382 भादवि व मु0अ0सं0 84/23 धारा 457, 380 भादवि में वांछित अभियुक्त रकीब पुत्र लाल मोहम्मद नि0 भैसना थाना सांगीपुर जनपद प्रतापगढ़ को पल्सर मोटरसाइकिल के साथ रेलवे क्रासिंग ककवा रोड के पास से गिरफ्तार किया गया, दो अभियुक्त मौके का फायदा उठाकर भाग गये । पल्सर मोटरसाइकिल संख्या यूपी 72 बीएच 1488 के कागज मांगने पर दिखा न सका । भागने वालो का नाम पता पूछने पर एक का नाम हिमांशु पुत्र हरिश्चन्द नि0 पूरे नत्थन शुक्ल का पुरवा थाना व जनपद अमेठी, दूसरे का नाम विनीत अग्रहरि नि0 सब्जी मण्डी कस्बा व थाना अमेठी बताया । पूछताछ में गिरफ्तार अभियुक्त रकीब ने बताया कि हम लोग अपने भागे साथी के साथ मिलकर चोरी करते है, चोरी के सामान बेचकर रुपए आपस में बांट लेते है, मेरे हिस्से में जो रुपए मिले थे वो खर्च हो गये तथा चोरी के काफी सामान के साथ कुछ साथी पहले ही पकड़ लिये गये थे, शेष सामान व रूपया आज भागे मेरे साथी हिमांशु व विनीत के पास है । थाना अमेठी पुलिस द्वारा विधिक कार्यवाही की जा रही है ।

अवैध तमंचा व जिंदा कारतूस के साथ 1 अभियुक्त को किया गया गिरफ्तार

मरुधर विशेष/संवाददाता शिवकुमार मौर्य

उत्तर प्रदेश जनपद रायबरेली डीह थाना में अपराध एवं अपराधियों पर प्रभावी अंकुश लगाने के क्रम में डीह थाना पुलिस टीम ने 1 अदद अवैध तमंचा व 1 जिंदा कारतूस के साथ अभियुक्त उत्कर्ष सिंह पुत्र राकेश सिंह निवासी खान जहाँपुर मजरे बरुआ थाना डीह को मुकदमा अपराध 109/23 धारा 3/25 के अंतर्गत दिलावरपुर मोड़ से गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया अभियुक्त को गिरफ्तार करने वाली टीम में एसआई राजकुमार शुक्ला, का.आशीष,का. योगेश, का. सचिन आदि शामिल रहे !

गौरीगंज पुलिस द्वारा पॉक्सो एक्ट में वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

मरुधर विशेष/संवाददाता शिवकुमार मौर्य

जनपद अमेठी में अपराध एवं अपराधियों के धर पकड़ हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में दिनांक 02.04.2023 को उ0नि0 राज कुमार यादव थाना गौरीगंज मय हमराही द्वारा देखभाल क्षेत्र, चेकिंग संदिग्ध व्यक्ति, वस्तु, वाहन के दौरान मुखबिर की सूचना पर मु0अ0सं0 119/23 धारा 354क, 506 भादवि व श पॉक्सो एक्ट में वांछित अभियुक्त रमेश पुत्र राम अभिलाष निवासी ग्राम पूरे फाजिल थाना गौरीगंज जनपद अमेठी उम्र करीब 23 वर्ष को काजी पट्टी रेलवे क्रॉसिंग के पास से समय करीब 01:10स्रे बजे गिरफ्तार किया गया । गिरफ्तार अभियुक्त के संबंध में थाना गौरीगंज पुलिस द्वारा विधिक कार्यवाही की जा रही है ।

मोटी बस्सी में विप्र फाउंडेशन युवा प्रकोष्ठ की कार्यकारिणी का गठन अध्यक्ष-गोपाल पण्डया उपाध्यक्ष- शैलेश जोशी को बनाया

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा

बांसवाड़ा:विप्र फाउंडेशन के जिला अध्यक्ष योगेश जी जोशी प्रदेष संगठन मंत्री हेमेंद्र जी पंड्या युवा प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष विनय भूषण भट्ट पियूष पंड्या विप्र युवा प्रकोष्ठ गढ़ी विधानसभा प्रभारी की अनुशंसा पर गांव मोटी बस्सी में विप्र फाउंडेशन युवा प्रकोष्ठ की कार्यकारिणी गठन किया गया जिसमे अध्यक्ष- गोपाल पण्डया को बनाया उपाध्यक्ष- शैलेश जोशी कोषाध्यक्ष- संजय व्यास अतिरिक्त सदस्य शैलेश उपाध्याय सुनील पण्डया कपिल पण्डया मानस जोशी पिंकल उपाध्याय अक्षय पण्डया दिलीप जोशी हर्षेश जोशी को बनाया गया साथ ही सभी पदाधिकारी को सगठन के हित में काम करने का निर्देश दिया गया। ये जानकारी पियूष पंड्या ने दी।

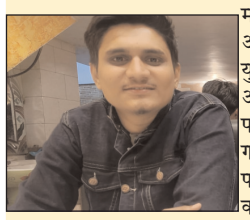

बड़ी सरवा में धार्मिक आयोजन: श्रीमद भागवत कथा का तीसरा दिन, भक्त प्रल्हाद चरित्र और नरसिंह अवतार प्रसंग पर सुनाई कथा

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा

कुशलगढः मध्यप्रदेश और राजस्थान की सीमा पर स्थित बड़ी सरवा में चल रही भागवत कथा ज्ञान गंगा का आज तीसरे दिन कथा सुनने के लिए श्रोताओं का तांता लगा रहा। जिसमें बड़ी सरवा ग्रामवासीयो के अलावा मध्यप्रदेश के भोपाल,खवासा पेटलावद,सारंगी रायपुरिया, राजगढ़, छड़ावाद राजस्थान के पाटन, छोटी सरवा, मोहकमपुरा, कुशलगढ़, बावलिया पाड़ा, बावड़ी डिंडोर, सूर्यवंश मोहल्ला,बस्सी महुडा आदि ग्रामीण अंचल के कई जनप्रतिनिधि नेता गण पधारे और कथा का लाभ लिया । तेजाजी मेला प्रांगण में आयोजित श्रीमद भागवत कथा के तीसरे दिन रविवार को कथा वाचक श्री मनुश्री महाराज ने ध्रुव चरित्र, भक्त प्रह्लाद चरित्र और नरसिह अवतार प्रसंग पर कथा सुनाई। कथा वाचक ने कहा कि हिरना कश्यप सबको आदेश दे रहा है कि भक्त प्रह्लाद को खत्म करो, भस्म करो। लकड़ियों के चारों तरफ जल्लाद खड़े कर दिए गए। इस दौरान जब आग का भयानक जलवा हुआ, तब भक्त प्रहलाद ने इतना ही कहा अच्छा भगवान, अच्छा मेरे राम तेरी मर्जी और भक्त प्रह्लाद बच गए। नृसिह अवतार में हिरना कश्यप को मार कर भक्त प्रह्लाद को बचाया। भगवान की भक्ति में ही शक्ति है। उन्होंने कहा कि सभी अपने बच्चों को संस्कार अवश्य दें, जिससे वह बुढ़ापे में अपने माता पिता की सेवा कर सकें, गो सेवा, साधु की सेवा कर सकें। कथा के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे। जिसमें प्रधान जजमान कौशल्या जोशी, कैलाश जोशी, लाला शंकर जोशी नारायण शंकर जोशी आनंद जोशी पंकज जोशी कमलेश जोशी अर्जुन जोशी पुरुषोत्तम जी जानी शांति लाल जी शर्मा भरत लाल जी शर्मा निलेश जी शर्मा नाथू लाल जी रावल रामकृष्ण जी शर्मा कमल सिंह जी झाला शंकर लाल जी भटेवरा प्रकाश सिंह जी चौहान लक्ष्मण लाल जी भटेवरा सरदार सिंह जी चौहान शक्ति सिंह जी भाटी कालू सिंह जी बी पी एम साहब बलवंत सिंह जी प्रहलादसिंह जी देवी सिंह जी संजय सिंह राजपूत देवेंद्र यादव फुल पटवा राहुल झाला मांगू सिंह जी वाडेल समस्त गणमान्य और कुशलगढ़ से पधारे हुए विप्र फाउंडेशन महिला प्रकोष्ठ परिवार के जिला उपाध्यक्ष तिलोत्तमा पंड्या, विप्र वाहिनी दिव्या पंड्या, ममता शर्मा,शांति पंचाल,सोहन बैरागी, रीना बैरागी, फुलवंती लक्ष्कार,रतलाम से तृप्ति शर्मा आदि महिला शक्ति उनके साथ पधारे हुए थे। अंत में आरती कर प्रसाद वितरण किया गया। ये जानकारी आनंद जोशी ने दी।

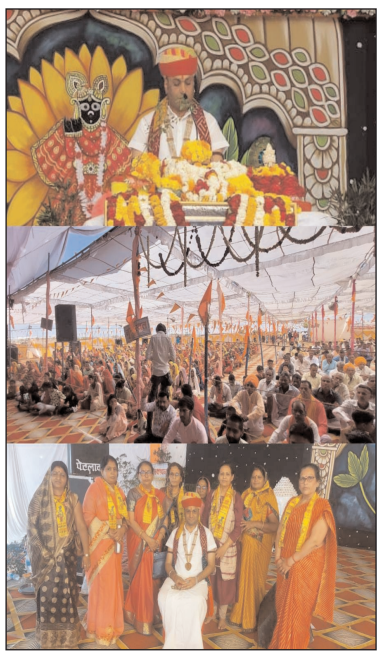

किशनगढ़बास में श्री श्याम प्रभू खाटू वाले का 49 वां दो दिवसीय विशाल मेले में आस्था व श्रद्धा का सैलाब उमड़ा

मरुधर विशेष/ मोहम्मद शकील

> कस्बे के समीपवर्ती ग्राम बास कृपालनगर मे श्री श्याम प्रभू खाटू वाले का 49 वां दो दिवसीय विशाल मेले के प्रथम दिन पदयात्रा में ध्वजा लेकर जाने वाले श्रद्धालुओं के साथ जगह-जगह भंड़ारे व श्याम बाबा के भजनों से कस्बें में धार्मिक अनुष्ठानों के कार्यक्रम किए गए। श्याम भक्त बंटी चावण्डिया ने बताया कि दो दिवसीय चलने वाले इस मेले मे सोमवार को झण्डारोहण के साथ सांय झांकियो का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कांग्रेस नेत्री सिमरत कौर ने हरी झंडी दिखाकर झांकियो को रवाना किया इस दौरान कमेटी द्वारा सिमरत कौर का स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान स्वागत किया गया।

किशनगढ़ बास। कस्बे के समीपवर्ती ग्राम बास कृपालनगर मे श्री श्याम प्रभू खाटू वाले का 49 वां दो दिवसीय विशाल मेले के प्रथम दिन पदयात्रा में ध्वजा लेकर जाने वाले श्रद्धालुओं के साथ जगह-जगह भंड़ारे व श्याम बाबा के भजनों से कस्बें में धार्मिक अनुष्ठानों के कार्यक्रम किए गए। श्याम भक्त बंटी चावण्डिया ने बताया कि दो दिवसीय चलने वाले इस मेले मे सोमवार को झण्डारोहण के साथ सांय झांकियो का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कांग्रेस नेत्री सिमरत कौर ने हरी झंडी दिखाकर झांकियो को रवाना किया इस दौरान कमेटी द्वारा सिमरत कौर का स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान स्वागत किया गया। इस मौके पर पूर्व प्रधान विनय व्यास, चेयरमैन प्रतिनिधि सतीश सिंघल सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे। ये झांकिया बासकृपालनगर मंदिर से प्रारम्भ होकर गंज किशनगढ़बास कस्बे के मुख्य बाजारों से होती हुई वापस मंदिर पहुंची। स्वागत के दौरान श्रद्धालुओ ने छोले, हलवे व मीठे पानी की छबील के साथ पेय पदार्थो की जगह-जगह स्टॉले लगाई गई। इसके अलावा आसपास के गाँवो व शहरो से श्रद्धालुओ का पहुँचने का सिलसिला शुरू हो गया। श्रद्धालु पद यात्रा के दौरान ध्वज लेकर बाबा के गुणगान करते हुऐ मंदिर पहुँचे। जिसमे प्रातः 8 बजे कीर्तन, 11 बजे प्रसाद वितरण उसके बाद प्रसिद्ध गायक कलाकारो द्वारा श्याम बाबा का भजनों के माध्यम से गुणगान किया गया। भजनों में श्याम भजनों ने श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। इस में दिल्ली, हरियाणा, यूपी व अन्य राज्य के लोग भी इस मेले में शिरकत की। मेले मे पुलिस और प्रशासन की व्यवस्था भी चाक-चौबन्द देखी गई। मेलें की पूर्व संध्या के अवसर पर ड़ीजे लगाकर श्याम भजनों की मधुर धुनो पर श्यामभक्त जमकर झूमें वहीं श्यामजी की झाँकी पर पुष्प वर्षा व गुब्बारों की सजावट क्षेत्र में आकर्षण का केन्द्र रही। सेवादारों में वेद प्रकाश कौशिक, दीपक कौशिक,प्रवीण अग्रवाल, नवीन खुराना, नरेन्द्र जैन,पूर्व प्रधान विनय व्यास,राजसिंह,दयाराम,बंटी अग्रवाल, रामपाल गुर्जर, हरीश लख्याणी, पंकज तनेजा, नरेश सिन्धी, बाबू सिन्धी, रूबल खुराना, हेमंत सोनी सहित कई लोगों ने भण्डारें में सेवा दी।

चुड़ला में कृषि महाविद्यालय का हुआ उद्घाटन

मरुधर विशेष/ जिला रिपोर्टर हवासिंह चौधरी

मुंडावर। मुंडावर क्षेत्र के ग्राम चुडला में रविवार को कृषि महाविद्यालय का उद्घाटन राजकीय प्राइमरी स्कूल के भवन में किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री शकुंतला रावत रही मंत्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि गहलोत सरकार ने ग्रामीण क्षेत्र में हर क्षेत्र में विकास किया है। गांव में इंग्लिश मीडियम से महात्मा गांधी विद्यालय खोलने, निशुल्क शिक्षा, आने जाने के लिए साइकिले स्कूटी, निशुल्क पुस्तकें, और न जाने कितने अनगिनत विकास कार्य करवाए है। चुड़ला कृषि महाविद्यालय भी विकास के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा। विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रधान रोहिताश चौधरी ने भी समुचित विकास के लिए नहर का लाना जरूरी बताते हुए कहा कि हमारी पदयात्रा के पाद मुख्यमंत्री ने बड़ा दिल कर 13000 करोड रुपए स्वीकृत क्षेत्र को बड़ा तोहफा दिया है और कैबिनेट मंत्री से निवेदन किया कि वह नहर के लिए सहयोग करें वहीं पर कैबिनेट मंत्री संगोला रावत ने चौधरी को आश्वासन दिया कि उनकी इस मुहिम को आगे बढ़ाते हुए उनके साथ कदम से कदम मिलाकर सरकार को अवगत करवाएगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विधायक मंजीत चौधरी ने कहा कि कृषि महाविद्यालय की मांग शुरू से ही मेरे पिताजी एवं मेरे द्वारा की जाती आ रही थी। जो इस बजट में मंजूर कर ली गई । कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में पंचायत समिति प्रधान सुनीता महेश गुप्ता, पीसीसी सदस्य कविता यादव मौजूद रहे। इस मौके पर मुंडावर पूर्व सरपंच अमिलाल, गंगाराम पटेल पूर्व प्रधान, मातोर सरपंच बख्तावर, राजाराम, मुंशी राम पटेल एडवोकेट, जसराम नांगल रानियां, सतीश एडवोकेट, भूरिया राम मास्टर, सोनू सरपंच मुंडावर, उमराव वी डि यो कोटकासिम, संतराम ठेकेदार, रामपत सरपंच, शीशराम पीटीआई कोटकासिम, सूबेदार हीरालाल बनेठी, किशोर चौधरी राजवाड़ा, सरजीत सरपंच सोरखा कला, मुकेश सरपंच पहेल, सोनू भारद्वाज मुंडावर, जगराम सरपंच नांगल रानियां, रामजीलाल सरपंच, रामपत सरपंच, वीरेन्द्र सुमन, सरपंच राजेश कसाणा,महेन्द्र,चेतराम पंच,अशोक पंच, सरपंचअप्पेराम, सोनू भारद्वाज, उधनवास से राजाराम, मुकेश पेहल, पूर्व सरपंच जगराम पटेल, सतीश एडवोकेट, भूरियाराम, शीशराम कोटकासिम, सरजीत सरपंच सोरखा, हीरालाल बड़ेटी, पूर्व सरपंच गिर्राज, मांगाराम कसाना, सुल्तान, बदलू, रामजीलाल, राजेश, मेंहर चंद, बाबूलाल, श्रीराम, बसावन, मडाराम, मोहर सिंह, रतीराम, पप्पू राम,सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

ब्राइट फ्यूचर स्कूल बर्डोद का वार्षिकोत्सव समारोह आयोजित

मरुधर हिन्द/ रमाकान्त शर्मा

बहरोड़ - उपखंड के निकटवर्ती कस्बा बर्डोद के ब्राइट फ्यूचर सैकडरी स्कूल में रविवार को वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में विद्यालय के छात्र-छात्राओं के द्वारा बहुत ही मनमोहक देशभक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी। समारोह में पधारे सभी अतिथियों का विद्यालय निदेशक संजय चौधरी एवं स्टाफ के द्वारा विद्यालय पट्टा व पौधा भेंट कर सम्मान किया गया। इस अवसर पर 10 वीं बोर्ड कक्षा के प्रतिभावन छात्रा तनिष्का को प्रथम पुरस्कार स्वरूप स्कूटी व छवि शर्मा को द्वितीय पुरस्कार लैपटॉप तथा जानवी को तृतीय पुरस्कार टेबलेट सहित अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया । स्कूल शिक्षा परिवार के जिला अध्यक्ष लोकेश मिश्रा ने संबोधित करते हुए कहा कि बच्चा शिक्षा में टॉप होना अच्छी बात है, लेकिन वह बच्चा संस्कारवान भी होना। वर्तमान समय में बच्चों में नैतिक पतन बहुत ज्यादा दिखाई दे रहा है। अतः सभी माता पिता एवं शिक्षक बच्चों को चरित्रवान बनाएं। निदेशक यूनिक स्कूल सुमित यादव ने कहा कि सभी अभिभावक ध्यान रखें कि बच्चों को अनावश्यक रूप से मोबाइल नहीं चलाने दे। मोबाइल के अत्यधिक उपयोग से बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास अवरूद्ध हो जाता है। विद्यालय सहायक निदेशक प्रियंका चौधरी ने विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया एवं विद्यालय की उपलब्धियों के बारे में बताया। इस अवसर पर नपा बर्डोद के वाईस चैयरमैन गिर्राज प्रसाद सैनी, अंतरराष्ट्रीय हिन्दू सेना प्रदेशाध्यक्ष अनिल यादव, पूर्व सरपंच रामवतार सैनी,पूर्व सरपंच राजाराम गुर्जर,जिला पार्षद सुनिल प्रवक्ता ,सुभाष ओला निदेशक जीसीआई, सुरेशचन्द अध्यक्ष शिक्षा परिवार बर्डोद,रोशनी सन्दीप ओला, विक्की ज्योतिषी, प्रदीप भेड़ी सहित विद्यालय स्टाफ एवं छात्र-छात्राएं व ग्रामीण उपस्थित रहे। विद्यालय निदेशक संजय चौधरी ने समारोह में पधारे सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

एडवोकेट अखिलेश कौशिक बने मुंडावर ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष

मरुधर विशेष/ जिला रिपोर्टर हवासिंह चौधरी

मुंडावर। एडवोकेट अखिलेश कौशिक की मुंडावर ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष पद पर नियुक्ति की गई है। रविवार को कोशिश की ब्लॉक अध्यक्ष पद पर नियुक्ति की घोषणा पर बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकताओं एवं पदाधिकारियों ने मुंडावर के किसान चेंबर में पहुंचकर कौशिक का सम्मान करते हुए बधाई दी। इस मौके पर पूर्व प्रधान रोहिताश्व चौधरी, पीसीसी सचिव ललित यादव, पीसीसी सदस्य कविता यादव, अपर लोक अभियोजक रामावतार चौधरी, ऑल इंडिया प्रोफेशनल कांग्रेस के जिलाध्यक्ष विशाल यादव, एडवोकेट रूपेश यादव, जगदीश यादव, शैतान यादव, अजरका सरपंच प्रतिनिधि रामनिवास चौधरी, रणसिंह नेहरा, सरजीत जाट हरसोली, राकेश गढ़ी, ताहिर खान, इरफान खान, गुलाब द्विवेदी आदि मौजूद रहे ।

मंदिर में हनुमान जन्मोत्सव की तैयारी शुरू

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा

कुशलगढः खेड़ा धरती के छोटी सरवा में पहली बार हनुमान जन्मोत्सव 6 अप्रैल 2023 गुरुवार को उजाला ग्रुप के नेतृत्व में सुंदरकांड, गरबा, भजन संध्या एव प्रसादी का भव्य आयोजन किया गया है। सिद्धेश्वर रामायण मंडल काकनवानी द्वारा भजनों की प्रस्तुति दी जाएगी और राहुल भाई एण्ड पार्टी द्वारा सुंदरकांड रात्रि 8:30 पर चालू हो जायेगी। हनुमान जन्मोत्सव की तैयारी शुरू कर दी गई है। आयोजन मंडल के सदस्य हनुमान जन्मोत्सव को भव्य बनाने की तैयारी कर रहे है। उस दिन मंदिर परिसर में कई कार्यक्रम का आयोजन होगा।आयोजन को सफल बनाने में हनुमान जन्मोत्सव आयोजक समिति के सहयोजक रिक्की उपाध्याय राहुल सिसोदिया दक्ष पंचाल जयदीप राठौड़ आनद प्रजापत सनी वर्मा पंकज प्रजापत लोकेश अतुल सहित अन्य लोग लगे हैं।

बिजली के तार से लगी आग, किसान की फसल हुई जलकर राख

मरुधर विशेष/संवाददाता शिवकुमार मौर्य

उत्तर प्रदेश जनपद रायबरेली के डीह ग्राम पंचायत जगदीशपुर में 2 अप्रैल दिन रविवार को विशाल सिंह निवासी जगदीशपुर के खेत में 11000 विद्युत लाइन गिर गयी जिससे विशाल सिंह की खेत में खड़ी गेंहू की फसल में आग लग गयी वहीं देखते ही देखते तेज हवा के झोकों के कारण आग पूरे खेत में फैल गयी जिससे विशाल सिंह की करीब ढाई बीघा गेंहू की फसल जलकर राख हो गयी !

115 दिन मे निंव से छत का कार्य पूर्ण हुआ देवी मंदिर का

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा

बडोदिया । बांसवाडा जिला मुख्यालय से बीस किमी दुर बडोदिया गांव के पास बासवाडा दाहोद हाईवे मुख्य मार्ग पर अवस्थित वागड के पावागढ उपनाम से प्रसिद्ध देवी तीर्थ नंदनी माता मंदिर का जिर्णोद्धार का कार्य इन दिनो तेजी से चल रहा है । समिति के भुपेश पटेल व मुदित जोशी ने बताया कि समिति के जितेन्द्र पाटीदार की अध्यक्षता मे 9 दिसम्बर 2022को हुऐ मंदिर शिलान्यास के बाद आस पास के कई गांवो के युवाओ व महिलाओ के विशेष सहयोग से मंदिर निर्माण कार्य मे तेजी आई ओर आज 115वें दिन मंदिर की छत भराई का कार्य भी पूर्ण हो गया जो कि इतने उचे पहाड पर असंभव को संभव बना दिया । विट्ठल पाटीदार व जगदीश पाटीदार ने बताया कि मंदिर की लंबाई 40 फीट,चोडाई 28 फीट ओर ऊचाई 32 फीट तक का कार्य जनसहयोग के माध्यम से किया गया । उन्होने बताया कि 1120 स्क्वायर फीट तक मंदिर की छत भराई का कार्य आज रविवार को चल रहा था तो समिति के सदस्यो ओर भक्तो मे अपनी योजना पूर्णता की ओर बढने का उत्साह था । इस मंदिर परिसर के चारो ओर से भक्तो द्वारा भक्ति की जा रही थी । इस दोरान समिति के महेश पाटीदार, रविन्द्र पाटीदार, दीपक ठाकुर, नरेश पाटीदार, हार्दिक टेलर, मुकेश पाटीदार,पुष्पेन्द्र पाटीदार,जगदीश पाटीदार के अलावा बडी संख्या मे भक्तजन उपस्थित थे । ये जानकारी दीपक जैन ने दी।

राहुल जी की सदस्यता को लेकर व राहुल जी द्वारा अडानी पर उठाए गए प्रश्नों के उत्तर हेतु

मरुधर विशेष /संवाददाता शिवकुमार मौर्य

आज महाराजगंज ब्लॉक के इज्ह साहब के माध्यम से जिलाधिकारी द्वारा महामहीम राष्ट्रपति जी को एक ज्ञापन प्रदेश महासचिव सुशील पासी जी ब्लॉक प्रभारी सुमित्रा रावत उपाध्यक्ष भगवानदीन फौजी,गया प्रसाद चौरसिया जी , ब्लाक सचिव सचिदानंद त्रिपाठी जी, ब्लाक सचिव आदित्य मौर्या जी,दशरथ पासी जी, जिला सचिव उमर जी, न्याय पंचायत अध्यक्ष राम चांद सिंह जी,न्याय पंचायत अध्यक्ष राजेश कुमार, यूथ सचिव कुश सिंह जी, विचित्र चौधरी जी,भगवानदीन पासी जी राम प्रकाश पासी रोहित मौर्या जी उदय भान सिंह जी,दुर्गेश रावत जी गंगा राम जी, राम मिलन जी, देशराज जी, जंगबहादुर जी, पलटू दास जी, अरविंद कुमार जी, रंजीत मौर्या जी, श्यामू जी,राम खेलावन जी, राम किसान पासी जी, विन्धा पासी जी,राधेश्याम जी, रमेश कुमार जी, नन्हे सिंह जी पूजा जी, मालती जी, सुमन जी, मिथलेश जी, रेखा जी, सुनीता जी, सुषमा जी,सरोज जी, दीपू पासी जी, नरेश जी, राम भवन जी, सहित सभी ग्राम सभा अध्यक्ष व बूथ अध्यक्षगणों के माध्यम से दिया गया।

मातृशक्ति दुर्गा वाहिनी की बहनों द्वारा शनिवार को प्रोफेसर कॉलोनी मैं सामूहिक रूप से हनुमान चालीसा भजन कीर्तन किया

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा

बांसवाड़ाः विश्व हिंदू परिषद बांसवाड़ा की मातृशक्ति दुर्गा वाहिनी की बहनों द्वारा शनिवार को शाम 8.00 बजे प्रोफेसर कॉलोनी मैं सामूहिक रूप से श्री हनुमान चालीसा श्री राम जी की स्तुति भजन कीर्तन एवं देश भक्ति के गीत व जय घोष किया गया कार्यक्रम के अंत में प्रसाद का वितरण किया गया है। विश्व हिंदू परिषद बांसवाड़ा के जिला प्रचार व प्रसार प्रमुख तरुण कुमार अडीचवाल ने बताया कि उक्त कार्यक्रम में दुर्गा वाहिनी की जिला संयोजिका साक्षी दक मातृशक्ति जिला सत्संग प्रमुख मिथलेश कौशिक दुर्गा वाहिनी जिला बाल संस्कार प्रमुख साधना देवड़ा भगवती तेली हनसा कलाल नानी बाई तेली सीमा तंबोली ललिता तेली आशा तेली मीना सोनी संगीता तेली इंदिरा प्रजापत अनीता तेली रेखा जैन कलावती कलाल शांति तेली रेखा सुथार सविता तेली आदि बहनों ने उक्त कार्यक्रम में भाग लिया। ये जानकारी तरुणकुमार अडीचवाल जिला प्रचार व प्रसार प्रमुख विश्व हिंदू परिषद बांसवाड़ा ने दी।

उत्तर प्रदेश लखनऊ प्रदेश में अब डॉक्टरों की कमी होगी दूर

मरुधर विशेष/संवाददाता शिवकुमार मौर्य

2382 पदों पर डॉक्टरों की होगी भर्ती लोक सेवा आयोग में भेजा गया प्रस्ताव मंजूरी मिलने के बाद डॉक्टरों की भर्ती होगी डॉक्टरों की कमी होगी दूर- ब्रजेश पाठक बेहतर होगा इलाज-डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक डॉक्टरों की कमी को दूर करने के लिए प्रयास डॉक्टरों को विशेष प्रशिक्षण दिलाया जा रहा है पुरानी सरकारें डॉक्टरों की भर्ती को लेकर गंभीर नहीं थीं इसकी वजह से अस्पतालों में लगातार डॉक्टरों की कमी रही डॉक्टरों के रिटायर होने से संकट और गहरा हो गया अस्पतालों की दशा सुधारने की दिशा में प्रयास जारी संविदा पर भी रखे जा रहे डॉक्टर- डिप्टी CM NHM के तहत 1903 डॉक्टर संविदा पर भर्ती किये 344 रिटायर डॉक्टर पुनर्नियोजन पर रखे जा चुके.

अवैध परिवहन करते 2 कोयला लोड ट्रक जप्त

मरुधर विशेष, करन सोनी

जशपुर नगरः- जशपुर जिले के पत्थलगांव में अवैध रूप से कोयला परिवहन करने के मामले में पत्थलगांव पुलिस ने कोयला लदी दो ट्रक को पकड़ा है । पुलिस ने चालक से सबन्धित कागजात की जांच कर रही है ।दरअसल पत्थलगांव के ठल्-43 में कोयला लदी दो ट्रक पर अवैध रूप से परिवहन किया जा रहा था , मुखबिर की सूचना पर पत्थलगांव पुलिस ने दोनों ट्रक को रोककर पूछताछ कर कोयला सम्बंधित रॉयल्टी व गिल्टी की मांग की गई । जिसपर चालक द्वारा अपर्याप्त कागजात होने पर दोनों ट्रक को जब्त कर थाने ले आयी ।पुलिस ने बताया कि ट्रक क्रमांक संख्या उऋ12 इख 2611 एवं उऋ12र 5877 पर कोरबा से अवैध रूप से कोयला परिवहन कर रहा था । जिसे थाने के स्टाफों की मदद से पकड़ा गया । जहां गवाहों के आधार पर रेड कार्यवायी कर धारा 91 नोटिश के आधार पर कोयला परिवहन हेतु रॉयल्टी व बिल्टी की मांग की गई जिसपर कागजात अपर्याप्त होने पर जब्त कर आगे की कार्यवाही की जा रही है ।

पेड़ में लटका मिला युवक का शव पुलिस पंचनामा कर जांच में जुटी

मरुधर विशेष, करन सोनी

सूरजपुर/:झ बसदेई थाना क्षेत्र के ग्राम नवापारा में शनिवार को दोपहर में एक युवक की पेड़ से लटकती हुई लाश मिली। घटना की जानकारी जैसे ही घर वालों को मिली उन्होंने तुरंत पुलिस को इसकी सूचना दी। पुलिस ने घटनास्थल पर जाकर शव को नीचे उतारकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया ।युवक की पहचान नवापारा के ही बादल यादव के रूप में हुई मृतक की उम्र लगभग 24 वर्ष बताई जा रही है। परिजनो के मुताबिक 31 मार्च को युवक घर से रोज की तरह घूमने के लिए निकला था तभी से युवक घर वापस नहीं आया था जिसकी शिकायत परिजनों द्वारा 1 अप्रैल को सुबह संबंधित पुलिस से की थी ।परिजनों ने प्रेम प्रसंग का मामला बताया है परिजनों ने युवती द्वारा मृतक के ऊपर दबाव बनाने का आरोप लगाया गया। मृतक से उस युवती का पहले से पहचान रहा है रहा है युवती के द्वारा मामला सखी सेंटर तक ले जाया गया था ।सूत्रों से पता चला की युवक-युवती कई साल से प्रेम प्रसंग में थे सखी सेंटर में युवती ने अपनी शिकायत में बताया था कि हम लोगों ने मंदिर में शादी कर लिया है। बाद मे युवक के द्वारा बहनों की शादी के बाद रखूंगा कहकर युवक-युवती के द्वारा आपसी समझौता किया गया था। फिलहाल पुलिस इस मामले की जांच कर रही है जांच के बाद ही पूरा मामला स्पष्ट हो पाएगा।

ना हम डरेंगे,ना हम झुकेंगे,लोकतंत्र का मशाल जलाएं रखेंगेह्व कैबिनेट मंत्री टीएस सिंह देव

मरुधर विशेष, करन सोनी

अंबिकापुर-भारत सत्याग्रह के तहत आज मान. स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंह देव जी के नेतृत्व में लोकतंत्र बचाओं-मशाल शांति रैली अंबिकापुर में निकाली गई। इस मशाल रैली में शामिल होकर हम सबने देश में लोकतंत्र को बचाएं रखने का संकल्प लिया,जिसे बीते नौ सालों से खत्म करने का प्रयास किया जा रहा है। राहुल गांधी की संसद सदस्यता मोदी जी समाप्त करवा सकते है मगर उनकी आवाज नहीं जो हमेशा शोषित,गरीब पिछड़ों के लिए उठते रहेंगे। भजपा की जल्द बाजी के निर्णय को बताया घबराहट,डर ।राहुल गांधी की संसदीय सदस्यता रद्द करने और आवास खाली कराने को लेकर पूरे देश भर में कांग्रेस कार्यकर्ता आक्रोशित हैं। छत्तीसगढ़ के अम्बिकापुर में भी मशाल रैली का आयोजन किया गया जिसमें कैबिनेट मंत्री टीएस सिंह देव के नेतृत्व में बड़ी संख्या में वरिष्ठ कांग्रेसी नेता,कार्यकर्ता , युवा कांग्रेस के कार्यकताओं ने मशाल रैली निकाली केंद्र की भाजपा सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी भी की। टीएस सिंह ने कहा कि मोदी सरकार जो भी राहुल गांधी के साथ कर रही है वह तानाशाही है यह सब जनता देख रही है. अम्बिकापुर में एनएसयूआई , युवा कांग्रेस कार्यकताओं ने काली पट्टी बांध कर मशाल रैली निकाली और भाजपा सरकार के खिलाफ नारेबाजी की।भाजपा महंगाई और बेरोजगारी जैसी समस्या पर बात नहीं करती राहुल गांधी की सदस्यता खत्म करके उन्हें बंगला खाली करने का नोटिस भेज दिया भाजपा सरकार लोकतंत्र को समाप्त करने की पूरी कोशिश में लगी हुई है। इस मौके पर सफी अहमद,बालकृष्ण पाठक,अजय अग्रवाल, व कांग्रेस के नेता व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

भारी मात्रा में नशीली सिरप लेकर ग्राहक का कर रहा था इंतजार किस्मत ने छोड़ा साथ पुलिस के लग गए हाथ

मरुधर विशेष, करन सोनी

सूरजपुर। पुलिस महानिरीक्षक, राम गोपाल गर्ग के सतत मार्गदर्शन में पुलिस अधीक्षक रामकृष्ण साहू ने जिले के थाना-चौकी प्रभारियों को नशे के धंधे में लिप्त लोगों के विरूद्ध सख्त कार्यवाही करते एवं क्षेत्र में सक्रिय मुखबीर का जाल फैलाने के निर्देश दिए थे जिसके बाद से ही जिले की पुलिस नशीली पदार्थ के गोरख धंधे पर सतत निगाह बनाए हुए है। इसी परिप्रेक्ष्य में बीते दिन थाना प्रतापपुर पुलिस को मुखबीर से सूचना मिला कि ग्राम चमनपुर चेमी थाना चलगली निवासी शनि मिया अपने पास नशीली कफ सिरप रखकर ग्राम शिवपुर में ग्राहक का इंतजार कर रहा है।अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मधुलिका सिंह व एसडीओपी प्रतापपुर अमोलक सिंह के मार्गदर्शन में थाना प्रतापपुर पुलिस की टीम ने ग्राम शिवपुर में घेराबंदी कर तनज्जुल रहमान उर्फ शनि पिता स्व. खलीलुल रहमान उम्र 45 वर्ष को पकड़ा जिसके कब्जे से ऑनरेक्स कफ सिरप 60 नग जिसकी बाजारू कीमत करीब 30 हजार रुपए है जिसे जप्त कर धारा 21(सी) एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्यवाही कर गिरफ्तार किया गया। इस कार्यवाही में थाना प्रभारी प्रतापपुर लक्ष्मण सिंह धुर्वे, एसआई राजेश तिवारी, नवल किशोर दुबे, प्रधान आरक्षक रामाधीन श्यामले, भूपेन्द्र सिंह, आरक्षक इन्द्रजीत सिंह, अरविन्द पाण्डेय, अवधेश कुशवाहा, मनोज राय, अनिल एक्का प्रवीण पैंकरा व निरंजन एक्का सक्रिय रहे।

नाबालिक के साथ किया दुष्कर्म झाड़-फूंक के बहाने

मरुधर विशेष, करन सोनी

एमसीबी/ नगर निगम चिरिमिरी के पोड़ी में एक नाबालिक के साथ झाड़ फूक कर दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। जहां पुलिस ने मामले को मामला दर्ज किया है और आरोपी को हिरासत में लिया है। मामले की पूरी जानकारी देते हुए पोंडी थाना प्रभारी सुनील सिंह ने बताया की पीड़िता अपने परिजनों के साथ आकर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। जिस पर अपराध पंजीबद्ध कर धारा 376 ,506 (4)पास्को एक्ट टोनही प्रताड़ना अधिनियम (6) के तहत मामला पंजीबद्ध किया गया था। आरोपी रामनारायण रजक जो वर्तमान पटना में रहता है। पीड़िता के घर आता- जाता था। और इसके साथ ही झाड़-फूंक का काम भी करता था। कुछ दिनों पहले झाड़-फूंक करने के बहाने आरोपी ने नाबालिक के घर मे उसके साथ दुष्कर्म किया। साथ ही पीड़िता को कहा कि अगर इस बारे में किसी को कुछ बोला तो जान से मार दूंगा। लगभग 8 से 10 दिन तक पीड़िता ने डर की वजह से किसी को कुछ नहीं बोला। लेकिन 1 अप्रैल को पीड़िता ने अपने परिजनों के साथ पोड़ी थाना में रिपोर्ट दर्ज कराई। जिसके बाद पोड़ी थाना द्वारा टीम बनाकर आरोपी को तत्काल छानबीन कर हिरासत में लेकर आरोपी को न्यायिक रिमांड पर भेजा गया।

ईटा भट्ठा के संचालक को पकड़ा चोरी के कोयला खरीदने के आरोप में

मरुधर विशेष, करन सोनी

सुरजपुर/ फर्जी ट्रक नंबर के जरिए एसईसीएल की गायत्री भूमिगत खदान से रायगढ़ की अंजनी स्टील प्राइवेट लिमिटेड के डीओ के जरिए करीब 28 टन कोयला लोड कर गायब कर देने के मामले में सूरजपुर कोतवाली पुलिस ने चोरी का कोयला खरीदने वाले ईंट भट्ठा संचालक नरेंद्र पैकरा को गिरफ्तार कर लिया है ।पुलिस ने उसके कब्जे से एक टन कोयला भी बरामद किया है। इस मामले में करीब डेढ़ माह पूर्व पुलिस ने ट्रक चालक समेत कोयला डिपो संचालक को गिरफ्तार कर घटना में प्रयुक्त ट्रक को बरामद किया था ।जुलाई 2022 में अंजनी स्टील प्राइवेट लिमिटेड गेरवानी रायगढ़ द्वारा एसईसीएल बिश्रामपुर क्षेत्र के गायत्री भूमिगत खदान से ई आक्शन के जरिए कोयले का उठाव किया जा रहा था। इसी दौरान ट्रक क्रमांक यूपी 65 एचटी 5283 के चालक ने संबंधित ट्रक नंबर का कागजात दिखाकर पांच जुलाई 2022 को गायत्री खदान से लिफ्टर अहिबरन सिंह के जरिए अंजनी स्टील प्राइवेट लिमिटेड रायगढ़ के लिए 27.980 टन कोयला लोड कर रायगढ़ के लिए रवाना हुआ था, लेकिन ट्रक चालक रायगढ़ पहुंचने के बजाय रास्ते से ही गायब हो गया था। सूरजपुर कोतवाली पुलिस ने कोयला लिफ्टर अहिबरन सिंह की रिपोर्ट पर अज्ञात आरोपितों के विरुद्ध धारा 420, 34 के तहत अपराध दर्ज किया था ।मामले में एसपी रामकृष्ण साहू के निर्देश पर एडिशनल एसपी मधुलिका सिंह, एसडीओपी प्रकाश सोनी, कोतवाली टीआई प्रकाश राठौर द्वारा लगातार मामले का पदार्फाश करने की कोशिश की जा रही थी। इसी बीच मुखबिर से जानकारी मिली कि अंबिकापुर निवासी कोल डिपो संचालक साठगांठ से उत्तर प्रदेश के प्रदीप कुमार बिंद नामक चालक द्वारा कोयले की हेराफेरी की गई है। सूरजपुर कोतवाली पुलिस टीम ने घेराबंदी कर अंबिकापुर में ट्रक के चालक प्रदीप कुमार बिंद निवासी सुकृत जिला राबर्टसगंज उत्तर प्रदेश को हिरासत में लेकर उससे सघन पूछताछ की थी। उसने पुलिस को बताया था कि उसने इसी ट्रक में नंबर प्लेट बदलकर मां सर्वेश्वरी कोल डिपो संचालक अंबिकापुर गोधनपुर निवासी प्रभाकर सिंह उर्फ मुन्ना् सिंह पिता भारत भूषण सिंह 34 वर्ष की मिलीभगत से कोयले की अफरा-तफरी की है। पुलिस ने आरोपित प्रदीप कुमार बिंद के साथ-साथ मामले में संलिप्त कोल डिपो संचालक प्रभाकर सिंह उर्फ मुन्ना् सिंह को भी गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस ने आरोपित चालक के कब्जे से मामले में लिप्त ट्रक को भी बरामद कर लिया था।

कोयला खरीदने वाला गिरफ्तारः कोयले के संबंध में पूछताछ में कोयला खरीदने वाले की पुष्टि होने पर कोतवाली पुलिस ने दरिमा थाना अंतर्गत ग्राम खाला स्थित ईंट भट्ठा के संचालक नरेंद्र पैकरा 51 वर्ष को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से एक टन कोयला बरामद किया है । आरोपित ने शेष 27 टन कोयला जला देने की बात कही है ।

किसान महासम्मेलन में छत्तीसगढ़ शासन के कैबिनेट मंत्री रविंद्र चौबे,तथा आबकारी मंत्री कवासी लखमा हुए शामिल

मरुधर विशेष, करन सोनी

बलरामपुर/ बलरामपुर जिले के ग्राम पंचायत महाराजगंज हाईस्कूल ग्राउंड में किसान महासम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों की संख्या में क्षेत्र के किसान, कांग्रेस कार्यकर्ता शामिल हुए ।किसान महासम्मेलन में छत्तीसगढ़ शासन के कैबिनेट मंत्री रविंद्र चौबे,तथा कवासी लखमा बलरामपुर- रामानुजगंज विधानसभा क्षेत्र के विधायक वृहस्पत सिंह,सामरी विधानसभा क्षेत्र के विधायक चिंतामणि महाराज शामिल होकर किसान सभा को संबोधित किए ।किसान सम्मेलन में पहुंचे छत्तीसगढ़ शासन के कैबिनेट मंत्री कवासी लखमा तथा रविंद्र चौबे ने सर्व प्रथम मिलेट कैफे का फीता काटकर उद्घाटन किया, तत्पश्चात बलरामपुर जिला मुख्यालय में बने शहीद स्मारक में स्थापित किए गए शहीद जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सभा स्थल महाराजगंज के लिए रवाना हुए ।महाराजगंज सभा स्थल पर किसान सम्मेलन के अवसर में जिला प्रशासन द्वारा विभिन्न विभागों का स्टाल प्रदर्शनी लगाएग था, जिसका मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री रविंद्र चौबे तथा कैबिनेट मंत्री कवासी लखमा के द्वारा अवलोकन किया गया ।वही मुख्य अतिथि के द्वारा करोड़ों रुपए के निर्माण कार्य का लोकार्पण एवं भूमि पूजन किया गया ।सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री रविंद्र चौबे ने कहा कि देश की मोदी सरकार ने विपक्ष के आवाज को दबाना चाहती है, हमारे नेता राहुल गांधी ने अदानी के मामले को लेकर सदन में जब चर्चा कर रहे थे, उस समय उनका माइक बंद कर दिया गया, सांसद सदस्यता समाप्त कर दी गई, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का देश में हिटलर सही चल रहा है ।महंगाई चरम सीमा पर है, गरीब किसान महंगाई की मार झेल रही है, इसी वर्ष 2023 में विधानसभा चुनाव छत्तीसगढ़ में है, आप लोग कांग्रेस के भूपेश बघेल की सरकार बनाइए, आपके क्षेत्र के विधायक बृहस्पति सिंह को चुनाव जीता कर भेजिए, ताकि किसानों के मजदूरों का गरीबों का आदिवासियों का भला हो सके।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से बलरामपुर कलेक्टर विजय दयाराम के, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती रेना जमील, पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक प्रशांत कतलम, एसडीएम भरत कौशिक, तथा कांग्रेस पदधिकारी ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष रिपुजीत सिंह देव, डवरा से परमेश्वर गुप्ता,संजीव गुप्ता,मुन्ना गुप्ता,सहित विधायक वृहस्पत सिंह के समर्थक हजारों की संख्या में मौजूद थे।

बगीचा के झूमराबहार में सामूहिक आत्महत्या के बाद मौके पर पहुंचे कलेक्टर एवम SDM फॉरेंसिक जांच जारी

मरुधर विशेष, करन सोनी

जशपुर बगीचा :- बगीचा विकास खंड ग्राम पंचायत सामरबार झुंमराडुमर पारा निवासी विशेष पिछड़ी जनजाति पहाड़ी कोरवा परिवारों के 35 वर्ष राजूराम पत्नी 22 वर्ष भिनसारी बालिका 3 वर्ष देवन्ती 1 वर्ष बालक देवन्त ने 1 अप्रैल को रात को आत्महत्या कर लिए हैं। जिला प्रशासन को खबर मिलते ही कलेक्टर डॉ रवि मित्तल गांव घटना स्थल पर पहुंचकर परिजनों से मुलाकात किए । और परिजनों को प्रशासन द्वारा हर संभव सहायता का भरोसा दिलाया पुलिस और फारेनसिक टीम पहुंच गई है ।परिवार वालों ने बताया कि जिला प्रशासन ने परिवार के लिए अन्तोदय राशनकार्ड बनाकर दिया है। साथ ही मनरेगा के तहत जाब कार्ड बनाया है। और कार्य करने के एवज में मजदूरी भुगतान किया गया। 19 मार्च 23 को उचित मूल्य दुकान से 35 किलो चावल 2 किलो नमक 2 किलो चना 1 किलो शक्कर भी दिया है। परिवार को प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ दिया गया है। मकान बनकर तैयार है। जिला प्रशासन प्रभावित परिवार को हर संभव सहायता करेगा एसडीएम बगीचा आर पी चौहान ने बताया कि परिवार के सभी सदस्यों का आयुष्मान कार्ड बनाया गया। बच्चे कुपोषित नहीं है उन्हें आंगनबाड़ी केंद्र से बच्चों को रेडी टू ईट नियमित मिलता था । मृतक राजूराम के मकान पक्का है। और बिजली की भी सुविधा दी गई है।

115 दिन मे निंव से छत का कार्य पूर्ण हुआ देवी मंदिर का

आस्था के केन्द्र पर छत भराई पूर्ण होने से भक्तो मे खुशी

अरुण जोशी ब्यूरो चीफ बांसवाड़ा

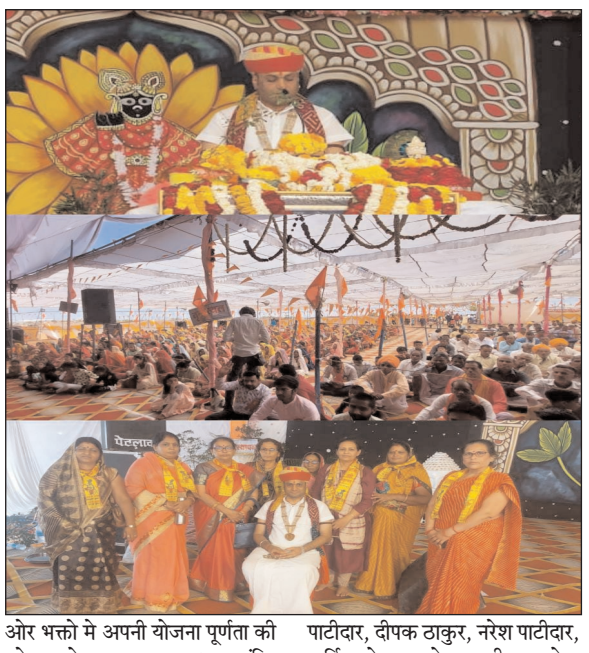

बडोदिया । बांसवाडा जिला मुख्यालय से बीस किमी दुर बडोदिया गांव के पास बासवाडा दाहोद हाईवे मुख्य मार्ग पर अवस्थित वागड के पावागढ उपनाम से प्रसिद्ध देवी तीर्थ नंदनी माता मंदिर का जिर्णोद्धार का कार्य इन दिनो तेजी से चल रहा है । समिति के भुपेश पटेल व मुदित जोशी ने बताया कि समिति के जितेन्द्र पाटीदार की अध्यक्षता मे 9 दिसम्बर 2022को हुऐ मंदिर शिलान्यास के बाद आस पास के कई गांवो के युवाओ व महिलाओ के विशेष सहयोग से मंदिर निर्माण कार्य मे तेजी आई ओर आज 115वें दिन मंदिर की छत भराई का कार्य भी पूर्ण हो गया जो कि इतने उचे पहाड पर असंभव को संभव बना दिया । विठ्ठल पाटीदार व जगदीश पाटीदार ने बताया कि मंदिर की लंबाई 40 फीट,चोडाई 28 फीट ओर ऊचाई 32 फीट तक का कार्य जनसहयोग के माध्यम से किया गया । उन्होने बताया कि 1120 स्क्वायर फीट तक मंदिर की छत भराई का कार्य आज रविवार को चल रहा था तो समिति के सदस्यो ओर भक्तो मे अपनी योजना पूर्णता की ओर बढने का उत्साह था । इस मंदिर परिसर के चारो ओर से भक्तो द्वारा भक्ति की जा रही थी । इस दोरान समिति के महेश पाटीदार, रविन्द्र पाटीदार, दीपक ठाकुर, नरेश पाटीदार, हार्दिक टेलर, मुकेश पाटीदार,पुष्पेन्द्र पाटीदार,जगदीश पाटीदार के अलावा बडी संख्या मे भक्तजन उपस्थित थे । ये जानकारी दीपक जैन ने दी।

किसी गरीब का बच्चा शिक्षा से ना रह जाए, भगवान सिंह

मरुधर विशेष आमिर खान कामा

कामा उपखंड के पहाड़ी प्रतिनिधि सरपंच भगवान सिंह ने भारतीया आदर्श विद्या पीठ पब्लिक स्कूल पहाड़ी मैं गरीब बच्चों के लिए शिक्षा के लिए सामान वितरण किया गया। महिला युवा नेता रचना पहाड़ी ने बताया पहाड़ी कस्बे के भारतीया आदर्श विद्या पीठ पब्लिक स्कूल में पहाड़ी प्रतिनिधि सरपंच भगवान सिंह ने एक पहल की है जो कि गरीब अतिम बच्चों के लिए शिक्षा के लिए सामान वितरण किया गया उनका कहना है कि कोई गरीब और यतीम बच्चा शिक्षा से ना रह जाएं क्योंकि शिक्षा का महत्व बहुत बड़ा है। शिक्षा के बिना यह जीवन बिल्कुल ही अधूरा है। शिक्षा वह साधन है, जो व्यक्ति को सफल और महान दोनों बनाता है।

मुंडावर में आम आदमी पार्टी ने शुरू की चुनाव की तैयारियां,

मरुधर विशेष/जिला रिपोर्टर हवासिंह चौधरी

मुंडावर। विधानसभा क्षेत्र में आम आदमी पार्टी ने चुनाव की तैयारी शुरू कर दी रविवार को आम आदमी पार्टी कार्यकताओं द्वारा उपखंड क्षेत्र में मीटिंग का आयोजन किया गया जिसमेंआम आदमी पार्टी कार्यकर्ताओ की ब्लॉक स्तरीय कमेटी का गठन करने के लिए एवम आगामी चुनाव की तैयारी के विषय को रणनीति बनाई गई। आप प्रभारी राकेश जाट आम आदमी पार्टी विधानसभा मुंडावर ने कार्यकताओं को बताया कि आप पार्टी के गांव गांव तक सदस्य बनाने जाए व राजस्थान में पार्टी का आधार तैयार कर प्रचार प्रसार किया जाए जिससे कि आने वाले विधानसभा चुनाव में आप को फायदा मिलेगा उन्होंने कहा कि आप पार्टी एक अपने आप में अहम योगदान रखती है जो विकास कार्य में काफी हद तक कामयाब रही है साथ ही कहा की आने वाले विधानसभा चुनाव में आप पार्टी अपना बहुमत दिखाती है या वापस बीजेपी, कांग्रेस ही 5 साल का टेस्ट खेल पाएंगी, ये तो वक्त बताएगा.

वार्षिकोत्सव एवं पारितोषिक वितरण कार्यक्रम का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया गया

मरुधर विशेष/ जिला रिपोर्टर हवासिंह चौधरी

बहरोड़। क्षेत्र के बडोद कस्बे में स्थित ब्राइट फ्यूचर स्कूल में वार्षिकोत्सव एवं पारितोषिक वितरण कार्यक्रम का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया गया इस दौरान कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला अध्यक्ष स्कूल शिक्षा परिवार लोकेश मिश्रा रहे जिनका विद्यालय परिवार की ओर से फूल माला एवं साफा पहनाकर भव्य स्वागत किया गया साथ ही मुख्य अतिथि ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की विद्यालय में अध्यनरत छात्र-छात्राओं ने बेहद सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी साथ ही कुछ ऐसी प्रस्तुतियां भी दी जो समाज में एक अच्छा संदेश प्रेषित करें बात चाहे बाल विवाह की हो या फिर पर्दा प्रथा की बात चाहे पर्यावरण सुरक्षा की हो या फिर समाज में महिलाओं के शोषण की समाज में जागृति लाने वाले संदेश भरे नाटक में छात्र-छात्राओं ने प्रस्तुत किए वही स्कूल संचालक संजय चौधरी ने बताया कि विद्यालय की ओर से इस बार एक अनूठी पहल की गई है जिस दौरान स्कूल में अध्ययनरत छात्रा तनिष्का पुत्री दारा सिंह जिन्होंने 97 पॉइंट 17% अंक हासिल कर राठ क्षेत्र को गौरवान्वित किया वार्षिक उत्सव कार्यक्रम के दौरान तनिष्का को विद्यालय की ओर से स्कूटी भेंट की गई वही छात्रा छवि शर्मा को लैपटॉप देकर सम्मानित किया गया इतना ही नहीं छात्रा जानवी और कोमल को टेबलेट विद्यालय की ओर से पारितोषिक दिया गया

ग्रीन- सरिस्का क्लीन- सरिस्का स्वच्छारणय अभियान का 20 वां चरण पूर्ण

मरुधर हिन्द/ रमाकान्त शर्मा

बानसूर - युवा जागृति संस्थान बानसूर अलवर द्वारा 'ग्रीन- सरिस्का क्लीन- सरिस्का स्वच्छारणय' अभियान के 20 वें चरण का शुभारंभ सरिस्का गेट से टहला गेट तक लगभग 20 किलोमीटर के क्षेत्र में साफ-सफाई का कार्य कर क्लीन -सरिस्का ,ग्रीन- सरिस्का अभियान को आगे बढ़ाया गया। जिसमें युवा जागृति संस्थान की टीम व सरिस्का होमगार्ड कर्मियों व वनकर्मियों के सहयोग से इस क्षेत्र में पॉलिथीन की थैलियां , कूड़े कचरे और अपशिष्ट पदार्थों को इकट्ठा कर जंगल से बाहर उचित निस्तारण किया गया। आम व्यक्ति व आने वाली पीढ़ी बने प्रकृति के प्रति सजग युवा जागृति संस्था सचिव गोकुल चंद सैनी ने बताया कि आज ग्रीन सरिस्का क्लीन सरिस्का स्वच्छारणय अभियान का 20 वां चरण है जिसमें संस्था के स्वयंसेवकों के साथ सरिस्का होमगार्ड कमीयों व वनकर्मियों ने बड़ी तन्मयता के साथ सहयोग किया है। आज सरिस्का गेट से टहला गेट तक लगभग 22 किलोमीटर के क्षेत्र व सरिस्का ऑफिस के बीच के मार्ग के दोनों तरफ फैले कूड़े कचरे को उठाया गया। साथ ही राह चलते राहगीरों से विनम्र अपील करते हुए कहा गया कि अनावश्यक कचरा इधर-उधर ना फेंके कचरा कचरा - पात्र में ही डालें ताकि जंगली जीव इस कचरे को न खाएं । यह संपूर्ण प्राकृतिक धरोहर किसी व्यक्ति विशेष की नहीं है अपितु संपूर्ण मानव जाति की है।

Marudharhind24 news Private Limited के लिए महारानी प्रिन्टर्स 17 वैष्णोदेवी नगर कालवाड़ रोड़ जयपुर से मुद्रित, एवं जीवन सिंह पुरा शामदा अलवर से प्रकाशित। मो.99281-68697, 7014373732, 90797 24256